R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्णं मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २२	आश्विन सं० २०३० वि० अक्टूबर १९७३	संख्या १/२५१

प्रार्थना

सतगुरु के चरण कमल में बन्दना

जय रूप भूप अनूप, निर्गुण, सगुण गुणकारी प्रभू ।
जय अजर अमर अतीत, शोभा सिंधु हितकारी प्रभू ॥
नहीं भेद तेरा कोई जाने, ज्ञान धन धरणी धरम् ।
तू मंत्र तंत्र है तंत्र गोप है, सन्त जन मन रजनम् ॥
जो प्रगट गुप्त अशोच निर्मल असम सत शीतल सदा ।
सोई नाथ करुणा पुंज कीजै, दास सेवक पर दया ॥
वार पार अपार मध्यम, अनन्त आदि विश्वेश्वरम् ।
तेरी वन्दना करें भक्त निशदिन, काम खन दल गंजनम् ॥
जेहि नेति नेति पुकारें अगम निगम, न भेद कोई पावहीं ।
जप जोग त्याग विराग संजुत, योगी ऋषी मुनी ध्यावहीं ॥

'मनुष्य बनो' का नया वर्ष

नव वर्ष तथा दिवाली की शुभ कामनायें

मालिक सबको सद्‌बुद्धि, सद्विचार प्रदान करें तथा सबका कल्याण करे।

इस अंक से 'मनुष्य बनो' का २२वां वर्ष प्रारम्भ होरहा है। इस अंक में अधिक सामिग्री देना चाहते थे मगर कागज की कमी के कारण मजबूरी रही। फिर भी इसमें बड़ी अमूल्य सामिग्री दी गई है जो बार बार पढ़ने तथा मनन करने योग्य है। इन विचारों के अनुसार आप अमल करेंगे तो कुछ ही समय में आपको बड़ा लाभ प्रतीत होगा। कर देखिये और आपको स्वयं पता चल जायगा।

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज ८७ वर्ष की आयु में भी बराबर सत्संग कराकर मोती बखेरते रहते हैं। 'मनुष्य बनो' में अधिकतर उनके ही बचनों को प्रकाशित किया जाता है। कोई स्वार्थ नहीं मगर केवल इस भाव से कि अच्छा है कि बात किसी की समझ में आजाय और उसका भला हो जाय।

उनके बचन प्रत्येक जाति, धर्म, पंथ वाले बूढ़े, बाल, स्त्रियों के लिये हितकर हैं और अमली पहलु लिये होते हैं इसलिये उनका महत्व उसी समय प्रतीत होता है जब उन पर अमल किया जाता है। केवल पठन मात्र से ही काम नहीं चलता। हां, पठन पाठन से भावना जाग्रत होती रहती है। यदि आप अपने विचारों को शुद्ध पवित्र बनालें, आपके मन में किसी के प्रति अशुभ भावना न रहे या यों कहिये कि घृणा द्वेष, छल कपट आदि न रहें तो ध्यान की शक्ति से आपको बड़ा लाभ होगा। 'मनुष्य बनो' के हर एक अंक में आप पढ़ते होंगे कि अमुक अमुक आदमी ने अपने विश्वास से तथा ध्यान से अनेकों काम महाराज के रूप से लिये। ध्यान की शक्ति से आपकी मनो-कामनायें पूर्ण होती रहेंगीं। मगर यदि आपके विचार में मलीनता है तो

आपकी हानि भी होगी। इसलिये सबसे पहिले सत्संग तथा सत्संग के बचनों का नित्यप्रति पाठ और मनन करना परम आवश्यक है ताकि आपके मन में शुद्धता आ जाय।

यदि आप सचमुच सुख शान्ति का जीवन चाहते हैं तो परमदयाल जी महाराज के बचनों से जो बातें आपको हितकर लगें उनको छांटकर अपनी प्रकृति और परिस्थिति के अनुसार अमल करना शुरू कर दीजिये।

'मनुष्य बनो' परमदयाल जी महाराज की शिक्षा के प्रचार के लिये निकाला जा रहा है ताकि मानव जाति का कल्याण हो सके।

ऐसे अमूल्य विचारों का प्रचार करना प्रत्येक प्रेमी सत्संगी तथा पाठक का कर्तव्य है कि इसके प्रचार में तन मन धन से सहयोग दें। साल में दो-चार ग्राहक बना देना कोई कठिन बात नहीं है। यही सच्ची गुरु सेवा है। यही गुरु ऋण है जो सबको भुगतान करना चाहिये।

इस वर्ष की विशेषता

प्राचीन काल का तथा आज के युग का सन्तों का अनुभव बताता है कि आवागमन से बचने तथा मालिक के साक्षात्कार करने के अधिकारी तो गिने चुने थोड़े से आदमी होते हैं मगर साँसारिक सुख, धन मान, सम्पत्ति आदि के सब ही अभिलाषी होते हैं। परमदयाल जी के पास अधिकतर ऐसे लोग आते हैं जो किसी न किसी बात से दुखी हैं और भौतिक पदार्थों की लालसा रखते हैं इसलिये परमदयाल जी के अनुभवों के आधार पर मानव जाति के व्यक्तिगत जीवन, गृहस्थ जीवन तथा सामाजिक जीवन को सुख और शांति से बिताने के लिये प्रत्येक मास पर्याप्त सामिग्री दी जाया करेगी।

'मनुष्य बनो' का चन्दा

यह बात हर एक आदमी जानता है कि हर एक वस्तु का मूल्य देना पड़ता है और देना चाहिये। 'मनुष्य बनो' आपको घर बैठे पहुँचता है और आपको अच्छे से अच्छे विचार आपके कल्याण के लिये देता है। इसकी और कोई आमदनी नहीं है। केवल चन्दे के रुपये से इसका काम चलाया जाता

है। जब चन्दे का भी रुपया प्राप्त न हो तो इसके कार्य में बाधा पहुंचना स्वाभाविक है। इसलिये प्रत्येक ग्राहक का यह कर्तव्य है कि इसका चन्दा वर्ष शुरू होते ही भेज दे।

लगभग २०० ग्राहकों पर इसका चन्दा बाकी है। दो-दो या तीन-तीन साल से तो बहुत से ग्राहकों पर बाकी है। कई बार पत्र भेजे गये, 'मनुष्य बनो' में भी बार-बार चन्दा भेजने को लिखा गया मगर न तो उन्होंने चन्दा भेजा न कोई चिट्ठी भेजी। इससे हमको बड़ा खेद हुआ। ऐसी स्थिति में चन्दा न आने पर उनको पत्र भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'मनुष्य बनो' मुफ्त

हम पहिले भी लिख चुके हैं कि जो लोग चन्दा देने में असमर्थ हैं मगर साथ ही उससे लाभ उठाते हों और दूसरों को भी लाभ पहुँचाते हों अथवा महाराज जी की शिक्षा का प्रचार करते हों, उनको 'मनुष्य बनो' मुफ्त दिया जायगा। आशा है प्रेमी ग्राहक तुरन्त इस वर्ष का चन्दा तुरन्त भेज देंगे।

दशहरा सत्संग देहली

में परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज पधारे थे और तीन सत्संग दिये थे। वर्षा होते हुये भी दोनों दिन अपार भीड़ थी। सुबह से शाम तक लोग महाराज जी को घेरे रहते थे।

अलीगढ़ में

भी दो दिन को महाराज जी ने आने की कृपा की और तीन बार सत्संग दिया था। महाराज जी का स्वास्थ्य ठीक था। ये बचन तैयार होने पर प्रकाशित किये जायेंगे।

कागज की कठिनाई

से सम्भव है अगला अंक समय पर न निकले तो पाठकों को इन्तजार करना चाहिये।

—देवीचरन मीतल
व्यवस्थापक

राजकन्या की कथा

एक राजा ईश्वर परायण था। उसकी राजकुमारी ने उसी से भक्ति भाव का पाठ पढ़ा था। जब वह सयानी हुई किसी ऐसे राजकुमार के साथ व्याही गई जो साधु सन्त भक्त और महात्मा का शब्द सुनकर चिढ़ जाता था। उसकी दृष्टि में यह सब अपाहिज और निकम्मे थे। यह कहा करता था "यह हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और दूसरों का माल हड़पते रहते हैं। यदि मैं राजसिंहासन पर बैठा तो यह नियम बनाऊँगा कि हर भिखमंगे को जेल में डाला जाये और उनसे बल पूर्वक काम लिया जाये।"

राजकुमारी ने अपने पति की दशा देखी। मन में उदास होगई। वहाँ क्या था और यहां क्या होगया? बाप तो साधु भक्त और पति की यह दशा! बहुत दिन होगये वहाँ कोई साधू नहीं आया। साधू तो वहाँ जाते हैं जहां प्रेम और भक्ति भाव देखते हैं। जहाँ इन सब का अभाव है वहां साधुओं का क्या काम! उसने अपनी लौंडी से कहा "यदि कोई साधू सन्त भूले भटके यहाँ आ निकलें तो मुझे अवश्य बतलाना।" संयोगवश कुछ दिनों पीछे वहाँ साधू आये। लौंडी ने उसे सूचना दी परन्तु कठिनाई यह थी कि यदि वह दर्शन को जाये तो कैसे जाये! कोई युक्ति समझ में न आई। उसके एक ही इकलौता लड़का था। उसने उसे विष दे दिया। दो ही चार घण्टों में शरीर नीला पड़ गया और वह मर गया। सब लोग दुखी हुये। महल में रोना पीटना मच गया। राजकुमारी ने अपने पति से कहा "यदि कोई साधु यहाँ होता तो मेरा लड़का कभी न मरता।" राजकुमार ने पूछा "साधु क्या होते हैं? इन अपाहिजों से कोई काम नहीं हो सकता। जहां राज वैद्य की बुद्धि काम नहीं करती वहां यह बेचारे क्या कर सकते हैं!" इसने कहा "मेरे बाप के घर मेरा भाई भी इसी प्रकार

मर गया था परन्तु वह साधू की आशीर्वाद से फिर जीवित हो गया था।"

राजकुमार को लड़के के साथ प्रेम था, नगर में साधुओं की खोज होने लगी। इस नये आये हुये साधू का पता मिला। राजकुमारी ने कहा "प्राण पति! यदि आज्ञा हो तो इसके मृतक शरीर को साधू के पास लेजाऊँ। बिना आपकी आज्ञा के जाना अधर्म समझती हूँ।" उसने उत्तर दिया "यदि तेरी यही इच्छा है तो जा। मैं रोकता नहीं परन्तु इससे कोई लाभ न होगा और मेरी प्रजा भी उनकी संगत से नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी।"

राजकुमारी प्रसन्न होगई। अधिक बात चीत करने का समय नहीं था। उसने लौंडी को साथ लिया और लड़के के की लोथ को उठवाकर साधू के स्थान पर पहुंची और चरणों पर गिर कर चरणामृत लिया। कुछ आप पिया और कुछ बच्चे के मुँह में भी डाला। उसमें अटल भक्ति थी। साधू के चरणामृत में पूर्ण बिश्वास होने के कारण लड़का उठ बैठा और खेलने लगा और जीता जागता घर आया।

राजकुमार की आंखें खुल गईं। इसी समय से वह कुछ का कुछ हो गया और राजकुमारी की संगत और भक्ति भाव के प्रभाव से वह भी साधु सेवा करने लगा। उसकी देखा देखी प्रजा में भी भक्ति भाव का प्रचार होगया। अब सब साधुओं के सत्संग में आने जाने लगे और ईश्वर भक्त होगये।

जब साधु संग से अमर पद प्राप्त हो जाता है तो एक लड़के का जीवित होना कौनसी बड़ी बात है! हाँ इसमें जो गुप्त रहस्य है उसका ज्ञान बहुत कम लोगों को होता है। यदि साधू इस संसार में न रहें तो फिर यह नर्क बन जाये और सुख आनन्द का नाम भी न रहे।

दोहा

साधू की महिमा बड़ी, नहिं जाने संसार।
साधू अमृत सार है, बाकी समझ असार॥
साधू के मन राम हैं, राम साधू के संग।
जो कोई साधू से मिले, राम का दरस निशंक॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मेंह न बरसे आपको, पेड़ न खाते फल ।
साधू नहिं हैं स्वार्थी, परमारथी अटल ॥
अपने प्रेम के दान से, सब को बख्शें प्रेम ।
यही साध का धर्म है, यही साध का नेम ॥
राधास्वामी आदि गुरू, साध संग नित दो ।
यह वर मैं माँगू सदा, चाहे सब ले लो ॥

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवत मन्दिर होशियारपुर १४-५-७३)

आज संक्रान्त है ! मेरे मन में विचार आया कि संक्रान्त के दिन हम लोग महीने का नाम सुनते हैं । इसमें क्या रहस्य है ! वास्तविकता यह है कि रात को आदमी सोजाता है और जब सुबह को उठता है तो उसका शरीर मन और मस्तिष्क ताजा होता हैं । उस समय उसको जिस प्रकार का विचार दिया जाता है वही संस्कार उसके दिमाग पर पड़ता है । हिन्दुओं में यह विचार पाया जाता है कि जब कोई आदमी किसी काम के लिये चलता है और उसको सामने से आता हुआ कोई हरिजन मिल जाय तो यह समझ लिया जाता है कि यह काम पूरा हो जायगा क्योंकि वह हरिजन अपनी ड्यूटी को भली प्रकार से पूरा करता है । इसलिये उसका सामने से आना शुभ समझा जाता है । यदि सामने से कोई बिना तिलक के ब्राह्मण मिल जाय तो यह समझा आता है कि यह काम पूरा नहीं होगा । क्यों ? क्योंकि उसने ब्राह्मण होते हुये ब्राह्मण का कर्म नहीं किया और ... पूरा नहीं कर रहा है । यह बातें मेरी आजमाई हुई हैं ।

सुबह के समय यदि बन्दर या बिल्ली का नाम कोई लेवे तो उसको अच्छा नहीं समझा जाता। क्योंकि यह चंचल होते हैं और उनकी चंचलता का संस्कार पड़ता है। यह साइकोलौजी (मनोविज्ञान) है। यह मन का खेल है। सारे दिन यदि किसी का कोई काम नहीं बनता या दिन भर किसी कारण भोजन करने का अवसर नहीं मिलता या किसी क्लेश में बीतता है तो कहते हैं कि आज सुबह उठकर पता नही किस मनहूस का मुँह देखा है। आज कल तो लोग भौतिकवादी (मादा पस्त) होगये हैं और ऐसी बातों को एक भ्रम समझते हैं लेकिन वास्तव में यह बातें बिल्कुल ठीक हैं। हर एक वस्तु का मनुष्य के दिमाग पर संस्कार का पड़ता है और वह संस्कार अपना प्रभाव दिखाता है। आप देखिये कि यदि आपको किसी पर क्रोध आता है तो पहिले तो तुम्हारा अपना मन जलता है। फिर दूसरे का मन जलाते हो। यह क्रोध का सँस्कार है। ऐसे ही यदि तुम किसी से घृणा करोगे तो वही घृणा के संस्कार आयेंगे और यदि प्रेम करोगे तो प्रेम के संस्कार आयेंगे। रात को सोते समय मालिक को याद करके सोना चाहिये ताकि अच्छा संस्कार पड़े और यदि रात को कोई स्वप्न भी आये तो अच्छा आये। सुबह को जब उठो तो मालिक का ध्यान करो ताकि तुम्हारा दिन अच्छा बीत जाय। मन पर अच्छे संस्कार पड़ने चाहिये। कई लोग तो यह कहते हैं कि सुबह उठ कर सबसे पहिले अपना हाथ देखो। इसीलिये कहा गया है कि बुरी संगत से बचो और अच्छी संगत रक्खो।

१५ दिसम्बर १९५० ई० को 'ट्रब्यून' समाचार पत्र में एक लेख निकला था। उसमें यह सिद्ध किया गया था कि मनुष्य का शरीर एक रेडियो स्टेशन है और उसमें से हर समय धारें या दूसरे शब्दों में संस्कार निकलते रहते हैं। उन्होंने उनको पर्दे (Screen) पर देखा है। यह आयु के अनुसार बदलते रहते हैं। बचपन में और संस्कार होते हैं, युवावस्था में और होते हैं और बुढ़ापे में और होते हैं। यह और बात है कि किसी को इनका भान हो या न हो। आप देखते हैं कि पुलिस के पास ऐसे कुत्ते हैं जो चोरों को ढूंढ लेते हैं। चोर का कपड़ा या जुता या उसकी कोई भी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वस्तु चोरी वाली जगह पर मिल जाय तो वह कुत्ते को सुंघा देते हैं। जिस रास्ते से चोर गया है वह कुत्ता उसी गंध को सूंघता हुआ उसी रास्ते से जाता है और चोर तक पहुँच जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि जो कुछ हमारे अन्तर से निकलता है वह बाहर फैलता है और घर के अन्दर भी रहता है।

यदि मूक आदमी मुँह से तो किसी को बुरा नहीं कहता मगर मन से दूसरों का बुरा चाहता है तो उसके विचार भी बाहर फैलते रहते हैं। जहां भी कोई रहता है वहाँ उसके संस्कार पड़ते हैं। इसलिये मैं कहा करता हूँ कि यहाँ मन्दिर में चाहे थोड़े आदमी रहें मगर जो रहें यह अच्छे हों और मन के पवित्र हों, ताकि बाहर से आने वालों पर अच्छा प्रभाव पड़े। तुम लोग घर में जाते हो। तुम्हारी स्त्री किसी कारण क्रोधित है यद्यपि अभी तक तुमने स्त्री को देखा नहीं और न तुमको यह पता है कि स्त्री क्रोधित है किन्तु जब तुम कमरे में जाओगे तो तुम्हारा चित्त घबरायेगा। इसलिये अपने मन को शुद्ध रक्खा करो। चिन्ता मत करो और कुढ़ना बन्द करो ताकि तुम्हारा प्रभाव तुम्हारे बच्चों पर न पड़े।

मन्दिर या गुरुद्वारे में जाने से भी तुमको लाभ हैं, क्योंकि जब तक तुम वहां रहोगे तब तक तुम्हारा विचार तो अच्छा रहेगा। आदमी का मन चंचल हैं और ठहरता नहीं है। इसको किसी के आधीन रक्खो। मैं बसरा बगदाद में रहा हूँ और भी कई साथी थे। जवानी थी और वहां सुन्दरता भी बहुत थी। मैं कभी बाजार नहीं गया था और अपने साथियों को भी अकेला नहीं जाने देता था। इनको मेरी लज्जा थी और मुझको इनकी लज्जा थी। इस तरह हम सब वहां बचे रहे। इसलिये बड़े बूढ़ों का अदब करना चाहिये। दाता दयालजी ने "नैयरे आजम" नामी पुस्तक में लिखा है—

बा अदब हो बा अदब हो बा अदब।

जिसमें अदब नहीं है उसका मन वश में नहीं आ सकता। हम लोगों के जीवन में यदि कोई कोई लड़का बाप का अदब (सम्मान) करता है तो

बाप भी उसका अदब करता है। बच्चों के सामने कोई बेजा बात या कोई बेजा कृत्य नहीं करता। इसलिये किसी का सहारा पकड़ो। जो कुछ तुम करोगे वही तुम्हारी सन्तान करेगी। यदि स्त्री पुरुष आपस में लड़ते हैं तो उनके बच्चे भी लड़ेंगे। माँ बाप के कार्य और विचारों का प्रभाव उनकी सन्तान के दिमाग पर पड़ता है और समय आने पर वे वैसे ही बन जायेंगे। एक बार लोहड़ी के दिन फीरोजपुर में मौहल्ले के आदमी इकट्ठे होकर मेरे पास आये और कहने लगे बाबाजी! हमारे बच्चे आपस में बहुत लड़ते हैं। आप उनको कुछ उपदेश करें। मैंने कहा कि नहीं। हाँ तुमको उपदेश करता हूँ कि तुम लोग अपने घरों में भाई भाई से. बाप बेटे से या बेटा बाप से द्वेष रखते हो और आपस में लड़ते झगड़ते हो तो वही प्रभाव तुम्हारे बच्चों पर पड़ेगा। जो कुछ तुम करते हो उसके प्रभाव से तुम्हारे बच्चे बच नहीं सकते। मैंने अपने छोटे भाई को अपने बच्चों की तरह रक्खा है। उससे प्रेम किया है।

इसका परिणाम यह हुआ कि आज तक हमारे बच्चों ने हम दोनों के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा। जैसे तुम हो वैसी ही तुम्हारी संतान होगी?

हम जो कुछ सोचते हैं उसका भी रेडीयेशन जाता है। आज संक्रान्त है और संक्रान्त को नाम सुनाया जाता है लेकिन वह जो कोई अच्छा आदमी हो। यह पुराने समय की बात है। पिछले समय में यदि कोई नंगे सिर महीने का नाम सुना देना था तो उसको अच्छा नहीं समझते थे। इन बातों में सिद्धान्त काम करता है। यदि सुबह के समय किसी ऐसे गांव का नाम लिया जाय जहां के लोग झगड़ालू ख्याल किये जाते हैं तो बुरा बताया जाता है। क्यों? इससे अच्छे संस्कार नहीं पड़ते।

महीने का नाम सुनो या न सुनो, यह तो एक रिवाज बन गई है। जहां तक होसके सुबह उठते ही सबसे पहिले मालिक को याद करो और प्रण करो कि दिन भर अच्छा काम करूँगा। रात को सोते समय दिन में जो जो गलतियां की हैं उन पर विचार करो कि भविष्य में गलती से बचूंगा। इस अभ्यास से आपका जीवन बदल जायगा।

किसी महापुरुष का दिया हुआ संस्कार काम कर जाता है। मेरे छोटे भाई का नाम ढेरूमल था। वह मेरे साथ दातादयालजी महाराज के पास गया। उसका नाम पूछा तो कहा कि ढेरूमल है। कहा कि बड़ा भद्दा नाम है। मैंने कहा कि हुजूर नाम बदल दीजिये। आदेश मिला कि कल सुबह मेरे पास लेआओ। ऐसा ही किया गया। उन्होंने उसका नाम सुरेन्द्रनाथ रक्खा अर्थात् इन्द्र का भी नाथ और कहा कि इसे कुर्सी पर बिठा दो। लड़का कुर्सी पर बैठने को आया है और कुर्सी पर बैठेगा। यह संस्कार है। मेरे पास भी कई आदमी बच्चों का नाम रखवाने के लिये आते हैं। संस्कार देने वाले के हृदय में प्रेम होना चाहिये और लेने वाले के मन में श्रद्धा विश्वास और मान आदर होना चाहिये। दाता दयालजी महाराज ने मुझे यह संस्कार दिया था कि तू फकीरों में चांद बनेगा। उनके संस्कार ने मेरे जीवन में परिवर्तन कर दिया। गलती हर एक आदमी करता है मगर वह अपने आपको बदलना चाहे तो बदल सकता हैं। इसमें कष्ट अवश्य होता है लेकिन अपने विचारों को धीरे धीरे बदलो। यदि तुम एक दम बदलोगे तो विचार अवश्य बदल जायगा मगर शारीरिक दशा बिगड़ जायगी। जैसे आपका रुपया एक बैंक में जमा है। यदि किसी ने आपको कह दिया कि वह बैंक फेल होगया और आपका रुपया मारा जायगा तो उसका चेहरा तुरन्त बदल जायगा।

आज संक्रान्त है। आप लोगों को नया ख्याल या संस्कार दे रहा हूँ कि धीरे धीरे अपने विचारों को बदलो। मैं जब बसरा बगदाद में था तो मैंने एक दम अपने आपको बदल लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि मैं बीमार होगया। ऐसे ही कमालपुर वाली माई के साथ हुआ। जब उसमें एक दम परिवर्तन आगया तो वह बड़ी बीमार होगई।

जल्दी से काम बिगड़ता है। धीरे धीरे मन को वश में करने की कोशिश करो कि तुम्हारी बुराइयां दूर हो जांय लेकिन इसमें समय लगता है। घबराने की आवश्यकता नहीं। तुम लोग घरों में रहते हो। शान्त रहने की कोशिश करो। इस कान से सुनो, उस कान निकाल दो। यह

विचार का जगत है। विचार को विचार से बदलो। यदि तुम्हारे मन में प्रेम आजाय तो दूसरों के मन में स्वयं आजायगा, लेकिन जहाँ स्वार्थ है वहां यह बात आना कठिन है।

ऋषियों ने मनुष्य की गढ़त के लिये यह सारा काम किया है। कल्पित जगत में संकल्प की शक्ति ही सब कुछ करती है। भोजन करते समय मालिक का ध्यान रक्खो। वह भोजन तुम्हारे लिये लाभ प्रद होगा। यदि कोई बच्चा या बूढ़ा पास हैं दो पहिले उसको दो। आज कल स्त्रियाँ जब पुरुषों को खाना खिलाती हैं तो एक साथ ही घर और बाहर के झगड़े शुरू कर देती हैं। यह ठीक नहीं है। प्रौफैसर तलवार को अधरंग था और वह चारपाई पर पड़ा रहता था। उसकी स्त्री बी० ए० थी। मेरे पड़ौस में मकान किराये पर लेलिया और वहां आगये। मैं जब अपने घर में खाना खाने बैठता तो मेरी स्त्री मुझसे कहा करती कि आपके पास प्रति दिन ही लोग आशीर्वाद के लिये आते हैं। यह हमारे पड़ौसी बहुत कष्ट में हैं। उनको भी आशीर्वाद दीजिये ताकि उस स्त्री का पति ठीक हो जाय। मैंने कहा कि जब मैं समाधि से उठूँ तो उस समय वह स्त्री मेरे पास आये। दूसरे दिन वह स्त्री मेरे पास आई। मैंने उससे कहा कि पहिली बात तो यह है कि तुम अपने दिल से निकाल दो कि यदि तुम्हारा पति मर गया तो तुम्हारे बच्चों का क्या होगा। दूसरी बात यह है कि जब तक वह भोजन करे तुम राम राम जपा करो। फिर मैं तलवार के पास गया और उससे कहा कि तुम अपने मन से यह ख्याल निकाल दो तो तुम ठीक नहीं होगे। जो डरता है वह डराया जाता है। कुछ दिनों के बाद वह लाठी के सहारे चलने फिरने लगा। फिर लाठी भी छोड़ दी। इसलिये सदा आशावादी रहो और प्रसन्न रहो। बच्चों से क्रोधित न हुआ करो। प्रेम से रहो। यह मन को खुश करने का तरीका है। जब मन प्रसन्न रहेगा तो तुम्हारा जीवन भी खुशी से बीतेगा।

———o———

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर २३-५-७३ सायं)

जब अन्तर शब्द की धुन प्रगटी, बाहर का गाना भूल गया।
घट में अपने बैठक पाई, मन द्वन्द मचाना भूल गया॥
दृष्टि सृष्टि गति समझ पड़ी, जैसी दृष्टि तैसी सृष्टि।
काल कर्म माया भव भय, आँख दिखाना भूल गया॥
तीन ताप की विपति गई, कलि के क्लेश दारुण मेटे।
गुरु चरण कमल की छाँह मिली, उत्पात में आना भूलगया॥
शान्ति है निर्भ्रान्ती है, आनन्द है सुख का जीवन है।
दुखदाई जग सुखदाई है, दुचिता दुख पाना भूल गया॥
राधास्वामी की ली शरनाई, निज रूप की मुझे समझ आई।
समझा सबको अगमा पाई, मन इससे लगाना भूल गया॥

बुढ़ापा आगया है। हर समय यह विचार रहता है कि किसी दिन यह संसार ओझल हो जायगा। कहाँ जाऊँगा, क्या परिणाम होगा, इस प्रकार के विचार मुद्दत से मन में आते रहते हैं। अब ज्यों ज्यों बुढ़ापा अधिक आरहा है, यह विचार और भी बढ़ रहे हैं। जीवन एक खब्त में बीत गया। राम राम जपा. विष्णु सहस्रनाम के पाठ किये। मन्दिरों में मत्थे टेक और पूजा पाठ किये। मौज दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी के चरणों में लेगई। उन्होंने सन्तमत की शिक्षा दी। करनी करने, साधन अभ्यास करने और क्रियात्मक जीवन में आने को कहा।

मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तेरी रहनी क्या है? रहनी में जाने की कोशिश करता रहता हूं। पहिले तो मैं समझता था कि सच बोलना, किसी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का चित्त न दुखाना, किसी का पैसा न खाना, किसी को तंग न करना, सुबह स्नान करना, मन्दिर या गुरुद्वारे में जाना और परोपकार, यह रहनी है। यह मैंने बहुत किया यद्यपि गिरता रहा मगर इस रहनी से मुझे वह वस्तु नहीं मिली जिसकी मेरे अन्तर में जिज्ञासा थी। उल्टा मुझे अहंकार आगया कि मैं सच बोलता हुं और परोपकार करता हूँ। रहनी क्या है? इसका पता मुझे आप लोगों से इस बुढ़ापे में लगा। चूंकि मुझे यह ज्ञान है कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है मगर मैं नहीं होता तो मुझे यह निश्चय होगया कि मेरे अन्तर भी जितने बिचार रंग रूप आते हैं वह वास्तव में हैं नहीं। केवल संस्कार हैं। जब तक मैं उनसे प्रेम करता था तो वह मेरी करनी थी। कबीर साहब ने लिखा है—

करनी करे सो पुत्र हमारा, कथनी कथे सो नाती।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम रहनी के साथी॥
बानी तो पानी भरे, चरों वेद मजूर।
करनी तो गारा करे, रहनी का घर दूर॥

जो अपने अन्तर करनी करता है या मालिक के मिलने का यत्न करता है, सुमिरन-ध्यान करता है या अन्तर में प्रेम करता है, यह करनी है। कबीर साहब कहते हैं कि वह तो मेरा बच्चा है। मैं उससे इस तरह प्रेम करता हूं जैसे बच्चे के साथ बाप प्रेम करता है। जो करनी करने का प्रयत्न करते हैं वह भी मुझे प्यारे हैं। जो पुस्तकों के प्रमाण से बात करते हैं वह कथनी है। कथनी कहते हैं नाती को। उसका भी आदर किया जाता है।

रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम रहनी के साथी।

मैं अपने से पूछता हूं कि तुम रहनी में रहते हो? प्रयत्न करता रहता हूँ और अपने निज स्वरूप या अपने आप में और शब्द में रहने का प्रयत्न करता रहता हूँ। कबीर साहब कहते हैं कि जो वहाँ रहता है वहां हमारा गुरु है। तुम मुझे गुरु समझ के आये हो। मैं न तो ...

हूँ और न तुम्हारा गांव जानता हूँ। यह रहनी का मार्ग है। क्रियात्मक जीवन का मार्ग है। शब्द स्वरूप में रहना ही रहनी है। शेष जो काम हैं, दान पुन्य, मन्दिर में जाना या संध्या बन्दन आदि यह केवल इसलिये हैं कि आदमी अपने अन्तर में जाने के योग्य हो जाय। जिस आदमी में शिष्टाचार और प्रेम नहीं है वह कहीं भी चला जाय, उसमें रहनी नहीं आसकती। लेकिन मैं उसका भी खंडन करता हूँ। मैं तो रहनी में जाने के लिये विवश हो रहा हूँ, क्योंकि बचपन से ही मेरा आपा (Self) कुछ चाहता है। पहिले तो इस चाह के साथ साँसारिक इच्छायें भी थीं। कभी धन की चाह कभी आदर मान की मगर अब ऐसी अवस्था चाहता हूं जो मेरे आपे को चिन्ता, फिक्र, घबराहट न आये। जब तक कोई मन में है वह खुश भी होगा और निराश भी होगा।

जब अन्तर शब्द की धुनि प्रगटी, बाहर का गाना भूल गया।

जब मनुष्य अपने अन्तर में शब्द को सुनने लग जाता है और उसको वहाँ रस आने लगता है तो वह मन्दिर में जाना, आर्ती करना और शब्द पढ़ना भूल जाता है। इसीलिये कबीर ने कहा है—

बानी तो पानी भरे, चारों वेद मजूर।
करनी तो गारा करे, रहनी का घर दूर॥

इसका यह अर्थ नहीं है कि वेद गलत हैं। जो लोग ग्रंथ या बाणियां पढ़ते हैं या रामायण या भागवत या कोई धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं या सुनते हैं वह गारा नहीं बन जाते। गारा क्या है? पानी और मिट्टी को मिलाकर एक कर दिया जाता है। ऐसे ही जब तक द्वैत को छोड़ कर अद्वैत भाव नहीं आजाता तब तक जीवन का ध्येय पूरा नहीं होता। यह मैं आप लोगों से नहीं कहता किन्तु अपने आप से पूछता हुँ कि तुमने गुरु बन कर देखा, सिद्धि शक्ति भी आई। संसार का आदर मान भी लिया। तुम कहाँ रहते हो! अब मैं अपने अन्तर शब्द में लय होने की कोशिश करता रहता हूँ और इससे बाहर की गति को भूल जाता हूँ।

घर में अपने बैठक पाई, मन द्वन्द मचाना भूल गया ॥

जब घट में सुरत शब्द में लग जाती है तो मन के अन्तर कोई दूसरी बात पैदा नहीं होती। जिसको यह समझ आजाती हैं वह फिर मन के विचारों को सच्चा मान कर उनके पीछे नहीं दौड़ता।

दृष्टि सृष्टि गति समझ पड़ी, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।
काल कर्म माया भय भव, आँख दिखाना भूल गये ॥

हमारे विचार के अनुसार हमारी दुनियाँ बनती है। जब इस बात का ज्ञान हो जाता है तो हम अपने विचार से जो अपनी दुनियाँ बनाते हैं तो उसका जो प्रभाव आत्मा पर पड़ता है वह या तो कम हो आता है या पड़ता नहीं। हम परिस्थितियों के अनुसार दुखी और सुखी होते रहते हैं। मुझ पर तो दाता दयाल जी की बड़ी दया हुई। मेरे जीवन का तख्ता पलट गया यद्यपि पूरी तरह नहीं। मन अब तक भी मुझ पर हमला करता रहता है लेकिन चूंकि मुझे इसके रूप का ज्ञान हो चुका है इसलिये मैं इसमें फँसता नहीं।

तीन ताप की विपति गई, कलि के कलेश दारुण मेटे।
गुरु चरण कमल की छाँह मिली, उत्पात में आना भूल गया ॥

गुरु के चरण हैं प्रकाश, नूर या सावित्री। मैं यह नहीं कहता कि गुरु से प्रेम न करो। जब तक बाहर में प्रेम करने या त्याग करने की आदत नहीं है तुम अन्तर में सावित्री को पकड नहीं सकते। यदि बाहर में त्याग की आदत तुम में नहीं है तो तुम अन्तर में भी मन के खेलों का त्याग नहीं कर सकते। इसलिये सब से पहिले बाहर के गुरु की भक्ति बताई गई है।

शान्ति है निभ्रान्ति है, आनन्द है सुख का जीवन है।
दुखदाई जग सुखदाई है, दुचिता दुख पाना भूल गया ॥

मैं यह नहीं कहता कि यदि मैं शब्द सुनता हूँ तो फिर मैं मरने पर वापिस नहीं आऊँगा। यह तो थ्यौरी है, अनुमान है मगर प्रामाण कोई नहीं है लेकिन इस साधन से मुझे शान्ति मिली।

राधास्वामी की ली शरनाई, निज रूप की मुझको समझ आई।
समझा सबको अगमा पाई मन इससे लगाना भूल गया ।।

यह समझ आई कि यह सृष्टि नाशवान है और एक दिन यहाँ से सबको चले जाना है। मैं सच कहता हूँ कि इस समय यदि कोई बाहर में मेरा गुरु है तो वह आप सत्संगी हैं। असली और सच्चा गुरु तो शब्द प्रकाश और ज्ञान है। तुम आये हो। मैंने तुमको समझाने की पूरी कोशिश की है और अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। गुरू के चरण अर्थात प्रकाश को पकड़ने की कोशिश करो। तुम्हारी शब्द से मिलने की जो अवस्था है उनका नाम है राधास्वामी। यह वैराग और त्याग का मार्ग हैं। जो त्याग नहीं कर सकता, वह इस अवस्था तक पहुंच नहीं सकता।

सब अपना ही अपना है

अगर है शमां अपनी, शमां का परवाना अपना है।
हुआ 'पीरेमुगां' अपना, तो फिर मयखाना अपना है ।।
कभी रहते हैं बस्ती में, कभी वीराना है मसकिन।
अगर बस्ती है अपनी, मंजर व वीराना अपना है ।।
हमीं हम हैं जहां में, दूसरा कोई कहां हरगिज।
यगाने सब के सब अपने, और बेगाना अपना है।
हवास अपने हैं दिल अपना है, जिस्म रूह हैं अपने।
हुआ फर्जाना जब अपना, तो फिर दीवाना अपना है ।।
किसी को गैर हम कैसे कहें, है गैर कौन अपना।
शरीयत अपनी है और, मजहबे रिन्दाना अपना है ।।
हसद बरवाले से क्यों, रहम क्यों नादार मस्कीं पर।
फकीरी शान अपनी, तरज भी शाहाना अपना है ।।
खुदा अपना रसूल अपना, वली अपना, नवी अपना।
खुदा कोई कहाँ है, मजहबे पाकाना अपना है ।।

महर्शि शिव

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर २४-९-७३)

अनन्ता तेरी गति नहि जानी ।
अपना भेद आप तुम गाया, सन्त रूप जग आनी ॥
बड़ भागी जिन दर्शन पाये, चरनन में लपटानी ॥
शब्द भेद दे लिया अपनाई, सुरत अधर चढ़ानी ॥
जिन तुम चरनन प्रीति न आई, जग में रहे अटकानी ॥
मो पै दया करी राधास्वामी, दीना चरन ठिकानी ॥

किसी समय मन में एक पागलपन सा आजाता है । क्यों ? कहीं भक्ति का जिक्र है, कहीं ज्ञान का जिक्र है, कहीं कर्म का उल्लेख है, और कहीं मालिक के रूप का वर्णन है । मैं इनको ढूंढ़ता फिरता था । जो रामायण ने कहा उसके पीछे लग गया : जो भागवत ने कहा उसके पीछे लग गया । जो स्वामी जी ने या कबीर ने कहा कि उसके पीछे लग गया । देखना चाहता था कि सचाई क्या है ?

जब मुझे ज्ञान हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है और उनके अनेक प्रकार के काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो यह सब कुछ ठुस होगया । वह जो मैं देखना चाहता था कि रामायण या भागवत में लिखा है और उनमें कहां तक सचाई है, यह सब टूट गये । अब रूप और रंग से आगे क्या हैं यह देखना चाहता हूं । रूप और रंगों का तो मुझे पता लग गया कि यह सब माया है और अपना ही विचार है ।

अब रूप रंग से आगे जो प्रकाश और शब्द है और उसको ढूंढता रहता हुँ । क्या ढूंढता हूँ ? यह कि उसका अन्त कहाँ है ? मगर उसका अन्त मिलता नहीं है । फिर मालिक क्या हुआ ? यह तो मुझे विश्वास होगया कि समाधि लगा कर मैंने अपने अन्तर करोड़ों मील का समुद्र या

करोड़ों मील का प्रकाश पैदा करलूं। जहाँ तक इच्छा है चले चलो। प्रकाश ही प्रकाश। इस प्रकाश का अन्त नहीं होता और न उसका अन्त मिलता है। यह मेरे जीवन का अनुभव है। प्रकाश को छोड़ो। तुम दुनियाँ की बातें सोचते हो। किसी विचार में मग्न हो जाते हो। तुम्हारा वह इतना फैलता है कि कहीं समाप्त नहीं होता। यदि डरका ख्याल हैं तो डर ही डर! और यदि खुशी का ख्याल है तो खुशी ही खुशी। न डर समाप्त होता है न खुशी समाप्त होती है। ऐसे ही कोई शब्द में बह गया, कोई प्रकाश में बह गया और कोई ख्याल में बह गया। यह मेरा अनुभव है।

फिर उस आदि को ढूंढता हूँ। पहिले तो मैं और ढंग से चला था मगर चलता चलता अब और ढंग पर आगया। अभी अभ्यास में था! क्या था? प्रकाश ही प्रकाश। चाहे लाखों मीलों का बनालो चाहे करोड़ों मीलों का, मगर बात एक ही है। किसी ने अपना विचार ऐसा बना लिया किसी ने प्रकाश बना लिया। सोचो! क्या कोई अन्त मिलता है। अब मैं उसको ढूंढता हुं जो मेरे अन्तर प्रकाश को बनाता है। मैं अपने अन्तर प्रकाश को देखता हूँ और शब्द को सुनता हूँ मगर उसका कोई अन्त नहीं मिलता। फिर कहता हूँ कि मालिक तेरी इच्छा पूरण हो। तू ने मुझे बनाया है। कैसे बनाया है और क्यों बनाया है? यह मुझे पता नहीं। वह जो तेरी मौज है वह करले। तेरा अन्त तो मिलता नहीं। सच्ची बात हैं। यहाँ तक मेरी पहुँच है। कल को मेरे साथ क्या हो जाय क्या पता है। यह जितना खेल है सब अपने ही आप का है। शायद इसीलिये सन्तों ने अपना आप कह दिया हो मगर मैं यह सोचता हूँ कि यदि यह सब अपना ही आप है तो जिस तरह मैं सूर्य और चन्द्र बना सकता हूँ इसी तरह मैं अपने रोग को क्यों नहीं ठीक कर सकता? मान लिया कि मैं नहीं कर सकता मगर यह और सन्त भी तो ठीक न कर सके। यह स्वयं बीमार हुये और कई कई वर्ष कष्ट उठाये। तो मैं क्या कहूँ कि मैं कहाँ पहुंचा। सब हौसले पस्त होगये या हार गये। एक शरणागत होना रह गया कि ऐ मालिक! मन भी

तुही है, प्रकाश भी तुही है, शब्द भी, अगम भी और अरंग भी तुही है। तू क्या है क्या नहीं, मेरी बुद्धि काम नहीं करती। मैं तो फेल होगया। बस शरणागत के सिवाय और कोई चारा नहीं है। इसमें जीवन बीत रहा है। वह जाने और उसका काम जाने। इस समय मेरे जीवन की यह रिसर्च है।

जिस जगह किसी का विश्वास बैठ गया, उसने उसी को सब कुछ कह दिया और उसी को ठीक कह दिया लेकिन वह क्या है क्या नहीं, इसका कोई पता नहीं। कबीर ने ठीक कहा है—

एक कहूँ तो है नहीं, दूजा कहूँ तो गार।
जैसा है तैसा रहे, कहें कबीर विचार॥

उसकी महिमा का तो कोई पता नहीं लगा। उसने कैसे यह खेल रचा हैं यह किसी को कुछ पता नहीं। वह किसी को राजा बनाये, किसी को मंत्री बनाये, किसी को अमीर और किसी को फकीर बनाये। किसी को सन्त बनाये किसी को असन्त बनाये, यह उसकी अपनी मौज है। किसी के बस में नहीं है। फिर भी मुझे यह समझ आया है। तुम लोग आजाते हो और मुझसे कुछ आशा रखते हो। आज बाणी में आया था कि गुरुमुख किसी को तार देता है। मैं सोचता हूँ फकीर! तुम भी गुरुमुख बने हुये हो। सब लोगों को तार दो। यह केवल एक सहारा है। जिस आदमी ने जिस चीज का सहारा पकड़ा हुआ है वह उसी का सहारा दूसरे को बता सकता है। जहाँ उसको आनन्द मिलता है वह दूसरे के विचार को वहाँ लेजाकर ठहरा सकता है। इसके सिवाय गुरुमुख और क्या कर सकता है। गुरु नाम है ज्ञान का। जिसने जिस वस्तु या ज्ञान को मुख्य माना हुआ है वह दूसरों को भी यही विश्वास देगा। मैं तो अब गुरुमुख नहीं रहा। मेरा तो विश्वास सब जगह का टूट गया। कहाँ पहुंचा? वहाँ कि वह एक परम तत्व है, अपरम्पार है। उसकी यह सब लीला है। किसी को उसका भेद नहीं मिला।

तुम लोग आजाते हो। तुम को एक बात बतादी है कि एक जगह निश्चय रक्खो। क्यों भटकते फिरते हो। मैंने भटक भटक के सारा जीवन खोदिया। लोग कहते हैं कि मैं पहुंच गया। तुम एक जगह विश्वास रखलो और बस ! उसके सहारे रहो। मरने के बाद क्या होगा किसी को पता नहीं। अपने विश्वास के सहारे चलो। कहीं न कहीं अवश्य ठहर जाओगे। मैं भी तो चलता चलता कहीं जाकर ठहरा ही हूँ।

उम्र की किश्ती रवां जिस जा लगी, वोही किनारा होगया।

मगर कुछ देर के बाद वह किश्ती फिर चलती है और फिर कहीं न कहीं ठहर जाती है। मेरी समझ में तो यह आया है। बस उसका एक सहारा है। उसीका ही सब खेल हैं। यही हुजूर महाराज ने कहा है कि ऐ मालिक ! ऐ अनन्ता ! तेरा किसी ने अन्त नहीं पाया। वह लिखते हैं कि गुरु ने जो मुझे आज्ञा दी मैंने उस पर अमल किया। उन्होंने जो मुझे इष्ट दिया मैंने उस पर विश्वास कर लिया। दातादयाल जी महाराज ने मुझे राधास्वामी धाम का इष्ट दिया था। मैं वहीं ठहरा। इसलिये अब मुझे शान्ति है मगर यह जीवन जो है यह कुछ न कुछ करना चाहता है। हर समय ख्याल रहता है कि अब चलना है। तुम लोग आजाते हो मैं सोचता हूँ कि मैं किसी को क्या दूँ। मेरे पास शुभ भावना है। मैं चाहता हूँ कि तुमको शान्ति मिले। सब से पहिले यह चाहता हूँ कि तुमको खाने को रोटी मिले। सब से पहिले पेट को रोटी चाहिये। यदि तुम्हारी रोटी का सामान है तो सब कुछ है अन्यथा कुछ नहीं। न ज्ञान है न ध्यान है। इसके बाद तन ढाँपने को कपड़ा चाहिये और फिर रहने को घर चाहिये। इन तीनों वस्तुओं के बिना हमारा जीवनयापन नहीं है। जिसको यह तीनों चीजें प्राप्त नहीं हैं वह यदि कहता है कि वह भक्त है तो बिल्कुल झूँठ है। हाँ इस भक्ति से उसके मन को केवल थोड़ी सी शान्ति मिलती है। मगर उसके मन को शान्ति तब मिलेगी जब किसी जगह का सहारा पकड़ेगा। इसलिये जहाँ तुम्हारा विश्वास है उसका पूर्णरूप से सहारा लो।

अमूल्य उपदेश

(१) न कोई विचार है न मन में कोई रंज है, न चिन्ता न संघर्ष का सामान है। मित्र की मित्रता और शत्रु की शत्रुता का ख्याल तक नहीं है। फिर भी कभी कभी चित्त क्यों उदास हो जाता है ?

(२) इसका कारण है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता।

(३) पहिला कारण यह है कि जिस दिन आदमी अधिक काम करता है और उसे प्रतीत होता है कि आज मुझे अधिक काम करना पड़ा है उस समय उसके अन्दर एक प्रकार की थकान आ जाती है। इस थकान में घुस कर देखने से उसे उदासी का पता लग जाता है।

(४) अंग्रेजी भाषा के दो शब्द Action (क्रिया) और Reaction (प्रतिक्रया) इस दशा पर अधिक प्रभाव डालते हैं। Action कहते हैं काम को और Reaction कहते हैं सुस्ती और एक प्रकार की बेहिसी को। अधिक काम करने के बाद इस दशा का आना आश्चर्य की बात नही है। यह प्राकृतिक नियम है।

(५) आदमी जो काम करे वह हँसते खेलते करे। उसके अन्दर काम करने का विचार तक न आने पाये। उस समय यह दशा पैदा नहीं होगी।

(६) जिस काम में अधिक ध्यान दिया जाता है उसमें चित्त के उखड़ने का भी भय रहता है इसलिये अभ्यासी को इससे बचकर रहना चाहिये।

(७) काम तो काम रहा। यदि वह अभ्यास भी करता है तो उसका अभ्यास भी साधारण रूप से हो। सहूलियत और साधारणपने का ख्याल हर समय रहे। इसका नाम युक्ति के साथ अभ्यास करना है। युक्ति कहते हैं नियम के साथ करने को जिसमें न कमी हो न बढ़ोतरी हो। केवल आदत

भी स्वयं उन्नति होती जायगी और जिस समय का उल्लेख किया गया है उससे बचाव रहेगा।

(८) जो अधिक तेज चलता है उसको ठोकर खाने का भी भय रहता है हर वस्तु की अधिकता का फल कमी हो जाता है और कमी का परिणाम अधिकता होता है। कमी और बढ़ोतरी से बचे रहने में ही भलाई है।

(९) आहार व्यवहार और विहार में युक्ति अवश्य रहे। आदमी इन बातों में से किसी में भी अधिकता या कमी न करे और नियमितता उसे अनियमितता के भाव से बचा रक्खेगी।

(१०) योगियों ने समझाया है कि अभ्यासी को नींद, आलस्य और प्रमाद से हमेशा बचकर रहना चाहिये। नींद और सुस्ती के अभिप्राय को तुम समझते हो। प्रमाद कहते हैं गर्व को। यदि अभ्यासी के अन्दर यह भान हुआ कि मैं उन्नति कर रहा हूँ और इस पर उसे गर्व है तो समझ लेना चाहिये कि वह प्रमाद का शिकार होगया। फिर उसकी उन्नति में रुकावट पड़ जायगी। यह अभ्यास का शत्रु है।

इसमें एक शब्द और भी शामिल करना है। वह तुष्टी है। तुष्टी कहते हैं संतोष करने को। जिसे संतोष आगया फिर उसका पग उन्नति के मार्ग पर नहीं पड़ेगा। जो राजा अपने राज्य के बढ़ाने की चिन्ता में नहीं रहता वह किसी दिन राज्य खो बैठेगा। जो जमींदार अपनी जमीन बढ़ाने के ख्याल को जगह नहीं देता भय है कि उसकी जमींदारी शीघ्र छिन जायेगी। जो विद्वान व्यक्ति विद्या की ओर से अपने आप को गाफिल बना लेता है सम्भव है जो कुछ विद्या उसने सीखी है वह भी नष्ट हो जाय। यह सब तुष्टी की हानियां हैं। उनसे बचकर रहने में लाभ है।

(११) अभ्यास नाम है मश्शाकी का जिसे अंग्रेजी में प्रैक्टिस कहते हैं। कहावत है 'Practice makes man perfect'। अभ्यास करते रहने से एक दिन मनुष्य में निपुणता आ जाती है। निपुणता के इच्छुक को तुष्टि के विचार को मन में स्थान न देना चाहिये। इसका साहस हमेशा बढ़ा-चढ़ा रहे और यथाशक्ति उसकी उमंग में कमी न आने पावे।

(१२) उदासी के एक कारण का जिक्र तो मैंने ऊपर बतला दिया। दूसरा कारण यह है कि जब किसी सहानुभूति करने वाले से जिस प्रकार का ख्याल धार के रूप में निकलने लगता है तो जिन लोगों को इस ख्याल से साथ सहानुभूति है उनके चित्त उस धार से प्रभावित होते रहते हैं। यह विचार इतना तेज होता है कि तुरन्त हजारों और लाखों मील की दूरी पर पार करते हुए अनुकूल दिमाग वालों के अन्दर प्रवेश कर जाता है। तुम इस आदमी से परिचित हो या न हो, चाहे वह हजारों कोस दूरी पर रहता हो लेकिन कुदरती समानता होने के कारण जो ख्याली धार उसके मन से निकलेगी उसे जहाँ जहां मन के अनुकूल पात्र मिलते जायेंगे, समाती हुई चली जायगी और उन दिलों को उससे प्रभावित होना पड़ेगा। बात थोड़ी सूक्ष्म है। हर एक की समझ से बाहर है। इसलिये थोड़ी बहुत उदाहरण से समझाने पर समझ में आ जायगी।

आज बेतार के समाचार पहुँचाने की कला का आविष्कार हो गया है। इसको अंग्रेजी में Wireless telegraphy कहते हैं। इससे जो संदेश भेजे जाते हैं वह लहराते हुए हमेशा उन यंत्रों को प्रभावित करते जायेंगे जो उनसे समानता रखते हैं। यही दशा मनुष्य के मन और मस्तिष्क की है। इन पर भी इस प्रकार का तुरन्त प्रभाव होता है। यदि कोई खुशी का ख्याल है तो उससे वैसे मन बुद्धि वालों को खुशी मिल जाती है और उन्हें पता नहीं लगता कि क्यों उन्हें अकारण खुशी मिल रही है क्योंकि प्रत्यक्ष में खुशी का कोई कारण दिखलाई नहीं पड़ता। इसी नियम के अनुसार जब उदासी की ख्याली धारें लहराती हुई सम स्थिति वाले दिमागों से संबन्ध पैदा करती चलेंगी तो उन पर भी वही प्रभाव होगा।

(१३) अ–जिस दिन तुम देखो कि तुम्हारे मन में बिना किसी कारण के उदासी आगई तो पहले यह सोचो कि अथा तुमने कोई अनुचित काम तो नहीं किया? किसी के चित्त को ठेस तो नहीं लगाई? झूठ या कपट से तो तुम्हें सम्बन्ध नहीं रहा है? तुमने आवश्यकता से अधिक काम तो नहीं किया है?

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ब–तुम में नींद, आलस, प्रमाद और तुष्टी का दोष तो नहीं पैदा हो गया ? सोचने समझने से इन सब का पता स्वयं लग जायगा। यदि देखो कि इनमें से कोई कारण नहीं है तो यह समझ लो कि बेतार के समाचार पहुँचाने के नियम [illegible] र उदासी के विचार तुम्हारे मन में घुस गये हैं।

(१४) जब यह दशा हो तो तुमको चाहिये कि सारे काम काज छोड़ कर खाट पर लेट जाओ और साधारण रीति से राधास्वामी नाम के सुमिरन में अपने चित्त को लगादो। चित्त एकाग्र रहे। साथ ही एकाग्रता के विचार को अधिक जोर न दिया जाय। जो काम हो बिल्कुल सहज रीति से हो। इस समय थोड़ी ही देर बाद तुम्हारी दशा बदल जायेगी। उदासी दूर हो जायगी। एक विशेष प्रकार की शान्ति आ जायेगी जिसे खुशी नहीं कह सकते। यह कुछ ऐसी विचित्र दशा होती है जो सिवाय अनुभव के समझ में नहीं आती।

—श्री दुर्गादास, चण्डीगढ़

—(: ० :)—

प्रेम मगन जे साधु जन, तिन गति कही न जात।
रोय रोय गावत हँसत, दया अटपटी बात ।।
कबीर हँसना दूर कर, रोने से कर प्रीति।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत ।।

प्रेम लग्यो परमेश्वर सों तब भूलि गयौ सिगरौ घर वारा।
ज्यों उन्मत्त फिरै जितही तित नेक रही न शरीर संभारा ।।
स्वास उसास उठै सब रोम चलै दृग नीर अखंडित धारा।
सुन्दर कौन करै नवधा विधि छाकि रह्यौ रस पो मतवारा ।।

प्रीति जो लागी धुलगई, पैठि गई मन माँहि।
रोम रोम पिउ पिउ करै, मुख की सरधा नाँहि

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर २२-७-७३)

मंगलम् अशब्द अरूप शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम अगम नाम स्वामी ॥
मंगलम् दीन बन्धु दीनानाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद आनन्द घन त्राता ॥
महिमा अनन्त आदि अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने कौन कह सुनावे ॥
संत भेष प्रगट जगत जीव को चिताया ।
काल कर्म फंद काट धुर ले पहुँचाया ॥
प्रथम तत्व निज स्वरूप पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस भजू राधास्वामी ॥

अभी होश है । शरीर का भी होश आता रहता है। बचपन से ही जब से चेतनता हुई तो ख्याल आया था कि इस सृष्टि का कोई आधार है । मैं उसको ढूंढने निकला था । मौज दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल महाराज के चरणों में ले गई । तब से ही उस मालिक को ढूंढता हुआ चला आरहा हूँ । मालिक क्या निकला ? कभी मैंने उसे राम के रूप में माना, कभी कृष्ण के रूप में माना । कभी साकार माना, कभी निराकार माना । कभी प्रकाश और कभी शब्द के रूप में माना । मेरे चित्त में एक भाव था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । यह भाव क्यों उत्पन्न हुआ ? हर एक धर्म ने ईश्वर के बारे में अलग अलग वाँणियाँ कहीं । मैं देखना चाहता था कि असलियत क्या है । हुजूर दाता दयाल ने मुझे सन्त मत या कबीर मत या राधास्वामी मत की शिक्षा दी । बात मेरी समझ में नहीं आती थी । मुझे सत ज्ञान देने और असलियत की समझ देने के लिये और मालिक का रूप बताने के लिये गुरु पदवी ली थी ।

आप लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होता है और तरह तरह से सहायता करता है। ऐसी चिट्ठियाँ मेरे पास प्रतिदिन आती हैं। चूंकि मैं नहीं होता तो मेरे अन्तर भी जो रूप रंग, भाव विचार, पैदा होते हैं मैं उनको छोड़कर उनके आगे मालिक को ढूँढने को विवश हो गया। आगे है प्रकाश और शब्द मगर उसमें भी चौबीस घण्टे ठहरा नहीं जाता। शब्द और प्रकाश में मैं उस वस्तु को ढूँढता हूँ जो शब्द को सुनती है और शब्द की साक्षी है, प्रकाश को देखती है और प्रकाश की साक्षी है मगर उसका अन्त नहीं मिलता। उसके बारे में दाता दयाल जी ने लिखा है :—

मंगलम् अशब्द अरूप शब्द रूप स्वामी।
मंगलम् अलख अनाम अगम नाम स्वामी॥

वह शब्द भी है और अशब्द भी है। वह नाम भी है और अनाम भी है। वह अकह अगाध और अगम है। वह परम तत्व आधार है। यह सब रचना उसी की है। यह समझ आजाने के बाद भी सुरत हमेशा तो वहां रह नहीं सकती और नीचे आती रहती है। यह मैं अपना अनुभव कह रहा हूँ। दूसरों का मुझे पता नहीं। मुझे तो यह समझ आई कि वह मालिक एक तत्व है। उसमें क्षोभ होता है और शब्द और प्रकाश उत्पन्न हो जाते हैं। यह सारा संसार इस प्रकाश का ही खेल है। ध्यान या तवज्जह हर समय वहाँ नहीं रह सकते। यह मुझे अपने अमली जीवन से ज्ञान हुआ और इससे मेरा वह खब्त कि मालिक क्या है पूरा होगया।

अब जीवन बिताया कैसे जाय ? चूंकि मुझे क्रियात्मक (अमली) जीवन में रहते हुये विचार की शक्ति का अनुभव होगया है कि जैसा किसी का ख्याल होगा वैसा उसका हाल होगा और वैसा ही उसका जीवन बनेगा। फिर इस जीवन में रहते हुये क्या किया जाय ? हर समय यह विचार रहे कि सबका मालिक एक है। यहां न कोई हिंदू है न कोई मुसलमान है न कोई ईसाई है। हम सब इंसान हैं। अपनी बुद्धि से ही कोई हिंदू बन गया, कोई ... अपनी ही बुद्धि से कानून बना

लिये। मैं तो इस परिणाम पर आया कि अपने विचार को स्वतन्त्र रखते हुये दुनियाँ में इन्सान बन के जियो। संशय भ्रम को छोड़कर मनुष्यता पर आओ। जीओ और जीने दो। खाओ और खिलाओ। सहायता लो और दूसरों की सहायता करो। किसी दुखिये की सहायता करो। निष्काम सेवा करो। मैंने इसीलिये इन्सान बनो या मनुष्य बनो की आवाज उठाई है।

दातादयाल जी की आज्ञा के अनुसार मैंने सत्संग का काम शुरू किया। मैं चूंकि सत्य बात कहता हूँ इसलिये डेरों और गद्दियों वाले और उनके चेले मेरा विरोध करते हैं। लेकिन मैं विरोध से बचना चाहता था इसलिये मैं यह काम बन्द करना चाहता था लेकिन गुरु महाराज की आज्ञा भी अटल थी। सन् १९४२ ई० में मैं बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास गया और कहा कि महाराज ! मैं गुरु आज्ञा के अनुसार सत्संग कराता हूँ और जो सचाई मेरी समझ में आती है वह कहता हूँ। लेकिन लोग मेरे विरोधी हो रहे हैं। इसलिये मैं यह काम करना नहीं चाहता। अब दाता दयाल जी तो चोला छोड़ गये। आप गुरु गद्दी पर विराजमान हैं। आप मुझे आज्ञा दें ताकि मैं यह काम बन्द कर दूँ। उन्होंने कहा कि गुरु आज्ञा का पालन करो और निर्भय होकर काम करो। मैं तुम्हारा पुश्त पनाह रहूँगा। उस समय उन्होंने कहा था कि फकीर ! मैंने लाखों को नाम दिया है मगर केवल दो-तीन आदमी भेद ज्ञाता निकले। उनमें से एक का नाम उन्होंने कृपाल सिंह बताया था और शेष नहीं बताये।

परसों सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की चिट्ठी आई। वह लिखते हैं कि २६ और २७ जुलाई को वह बाबा सावनसिंह जी महाराज का जन्मदिन देहली में मना रहे हैं और उसका नाम उन्होंने 'मानव एकता दिवस' रक्खा है जैसे पं० नेहरू के जन्मदिन को 'बाल दिवस' कहा जाता है। ख्याल आया कि फकीर तुमने भी 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है और वह भी मानव एकता चाहते है। क्या मानव एकता हो सकती है ? कहने को तो कुछ कहो। काँग्रेस "गरीबी हटाओ" और "समाजवाद लाओ" का नारा लगा रही है। महात्मा गाँधी "राम राज्य" लाना चाहते थे।

क्या गरीबी हट गई ? क्या समाजवाद आगया ? यहाँ मानवत मन्दिर में दस बीस आदमी रहते हैं। सब एक प्रकृति के तो नहीं हैं। इनमें भी किसी समय तू तू मैं मैं की नौबत आ जाती है। सब डेरों, मठों और धामों में यही दशा है। इनको तो छोड़ो। घरों में देखो। पाँच छः मेम्बरों का कुटुम्ब है। एक ही कुल है और एक ही रक्त है लेकिन उनमें भी पार्टीबन्दी है और झगड़ा है। हर एक गांव में पार्टीबन्दी है। पौलिटीकल पार्टियाँ एक दूसरे की विरोधी हैं। इसका कारण क्या है ? एक तो हमारा धार्मिक भ्रम है। कोई हिंदू है, कोई मुसलमान है, कोई सिक्ख है और कोई ईसाई है। अज्ञान के कारण एक दूसरे का विरोध करते हैं इसलिये हमारी एकता नहीं है। घरों में झगड़े क्यों होते हैं ? घरों में हम एक दूसरे के काम पर नुक्ताचीनी करते हैं। स्त्री का किया हुआ काम पति को पसन्द नहीं है और पति ने जो किया स्त्री उससे खुश नहीं है। इसलिये एकता नहीं है। स्वार्थ के कारण भाइयों में एकता नहीं है। घर में लड़का कहता है कि मेरी बात मानी जाय और अपनी बात मनवाने पर तुला हुआ है। इसलिये एकता नहीं है। यही दशा पौलिटीकल पार्टियों की है।

अब मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या संत कृपाल सिंह मानव जाति में एकता ला सकते हैं ? क्या वह सबको इकठ्ठा कर सकते हैं ? क्या हमारी गरीबी मिट सकती है या नहीं ? क्या समाजवाद आ सकता है ? इसका मूल कारण क्या है ? धार्मिक एकता के लिये तो मैं वह काम कर चला हूँ जो आजतक किसी सन्त ने नहीं किया। यद्यपि सब सन्तों ने किया मगर संकेतों में किया जिसको किसी ने समझा नहीं। मैंने डंडा हाथ में लेकर विरोध की परवाह न करते हुये स्पष्ट वर्णन से काम लिया ताकि बात लोगों की समझ में आजाय। राष्ट्रीय एकता का तो मुझे ख्याल नहीं आता। घरेलू एकता के बारे में सुनो :—

मत देख पराये औगुन। क्यों पाप बढ़ावे छिन छिन ॥

हम लोग अपने घर में अपने लड़के के काम में कोई त्रुटि देखते हैं तो उसे बुरा भला कहते हैं और लड़का विरुद्ध हो जाता है। एक गलती तो

लड़के ने की कि उसने कोई काम बिगाड़ दिया और दूसरी गलती हमने की कि हमने बुद्धि से काम नहीं लिया और लड़के को बुरी तरह से बुरा भला कहा। इससे अच्छा परिणाम निकलने के बजाय उल्टा लड़का विरुद्ध हो गया। ऐसा क्यों हुआ ? हमने उसको प्रेम से समझाया नहीं। हमने उसके ही दोष देखे। अपनी ओर नहीं देखा। इसलिये घर की एकता समाप्त हो गई। एकता से खुशी, आनन्द और शान्ति मिलती है। हमारे घरों में शांति इसलिये नहीं है कि हम घरों में दूसरे के दोष देखते हैं। उनकी बुराइयां देकते हैं किन्तु अपनी ओर नहीं देखते। जब तक हम अपनी बुराइयों को नहीं देखेंगे और दूसरों की नुक्ताचीनी, निन्दा और चुगली करते रहेंगे तब तक घरों में शान्ति नहीं हो सकती। मेरे पास प्रतिदिन चिट्ठियाँ आती हैं। कहीं पति को स्त्री से शिकायत है, कहीं स्त्री को पति से शिकायत है। कोई सास बहू के खिलाफ है तो कोई बहू सास की विरोधी है। भाई को भाई से घृणा है। बाप बेटे का झगड़ा है। यह सब दूसरों के ऐब दखने के झगड़े हैं।

पाप क्या है ? जिस कर्म के करने से तुम्हारे मन को डर लगे और कमजोरी प्रतीत हो वह पाप कर्म है। जब कोई आदमी किसी से किसी की चुगली करता है तो चुगली करने के बाद कह देता हैं कि भई मेरा नाम मत लेना। यही दशा स्त्रियों की है। एक स्त्री दूसरी स्त्री की बहू की निन्दा करती है मगर साथ ही यह कह देती है कि मेरा नाम मत लेना। ऐसा क्यों होता है ? निन्दा करते समय उसको डर लगता है। इसलिये यह पाप कर्म है। जिस काम के करने से तुमको खुशी मन को शान्ति मिलती है वह पुन्य है। अपने घरेलु जीवन को देखो। हम दूसरों के सामने अपनी स्त्री से कोई अनुचित कृत्य नहीं करते यद्यपि हमारा अधिकार है किन्तु यह सामाजिक पाप है। इसलिये गृहस्थ जीवन में या राजनैतिक जीवन में वह काम न करो जिससे तुमको डर लगे अथवा चिन्ता हो। तब तुम सुखी रह सकते हो।

आज सन्त कृपालसिंह की चिट्ठी पर ख्याल आया कि उन्होंने 'मानवता की एकता' की आवाज उठाई है और मैंने 'इंसान बनो' की आवाज उठाई

और मानवता का ख्याल लोगों को दिया है। सोचता हूँ कि क्या एकता हो जायगी ? सबसे पहले है धार्मिक एकता। सब धर्म सम्प्रदाय और पंथ इस बात पर एकमत हैं कि सारे संसार का मालिक एक है। कोई उसको किसी नाम से पुकारता है कोई किसी नाम से। फिर उस मलिक के नाम पर झगड़ा कैसा ? तुम भी उसी को मानते हो और दूसरे भी उसीको मानते हैं। तुम अपने विश्वास से मानो और दूसरे को उसके विश्वास के अनुसार मानने दो। फिर झगड़ा कैसा ? अपने जीवन को क्रियात्मक बनाओ। दूसरे के काम में व्यर्थ हस्तक्षेप मत करो। किसी की बुराई मत करो। यदि किसी की भलाई के लिये या किसी के सुधार करने के लिये उसे कुछ कहने की आवश्यकता पड़े तो इसके बजाय कि हम उसके बारे में किसी दूसरे को कहें, हम ही उसको प्रेम से समझादें। मैं सच्ची बात मुंह पर कह देता हूँ। मेरा अन्तर और बाहर एक है। मेरा जीवन एक रस है। यदि तुम लोग एकता चाहते हो तो मैंने उसके लिये आपको बता दिया है कि मालिक एक है। उसका कोई रंग रूप नहीं है। सब रंग रूप उसी के हैं। जिस रूप में उसे मानोगे उसी रूप में तुम्हारी सहायता होती रहेगी। मैंने तुमको अपने जीवन का हाल बता दिया है।

परसों से एक बीमार बुढ़िया स्त्री आई हुई है। उसके एक आधा पागल लड़का है। कहती है कि मैं चार बर्ष से बीमार हूँ। आराम नहीं होता। जो कुछ मेरे पास था सब इलाज में खर्च कर दिया। अब रोटी से भी तंग हूं। आपको गुरु मानती हूँ और आपकी शरण में आई हूँ। मैं तो उसको जानता नहीं हूँ। यह सब उसका अपना ही श्रद्धा विश्वास है। लोग अपने श्रद्धा विश्वास से मेरा रूप प्रगट कर लेते हैं और वह रूप उनके काम कर जाता है। जिस रूप पर तुम्हारा विश्वास होगा उसी रूप के द्वारा तुम्हारी सहायता होती रहेगी। तुम्हारा अपना ही विश्वास काम करता है। यदि यह बात समझ में आजाय तो तुम्हारा धार्मिक पक्षपात दूर हो सकता है। मालिक का तो किसी को अन्त नहीं मिला। हुजूर महाराज ने लिखा है कि "अनन्ता तेरा अन्त न पाया"। उन्होंने मालिक को मिलने के लिये

अपने गुरु की इतनी सेवा की जिसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। बहुत अनुभव के बाद उन्होंने यह लिखा है :—

अनन्ता तेरी गति नहिं जानी ॥
अपना भेद आप तुम गाया, संत रूप जग आनी।
बड़ भागी जिन दर्शन पाया, चरनन में लपटानी ॥

वह कहते हैं कि ऐ मालिक ! तेरी गति को कोई नहीं जान सकता। यही बात दातादयाल जी ने कही है।

सन्त भेष प्रगट जगत, जीव को चिताया ॥
काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुंचाया ॥

अब वह धुर पद क्या है ? मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि तुम बताओ कि तुमको क्या ध्रुव पद मिला ! मेरा ध्रुव पद यह है कि मैं कौन हूँ। मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। अभ्यास करते करते दिमाग थक गया। मैं शब्द और प्रकाश स्वरूप हूँ। मगर मैं शब्द प्रकाश स्वरूप होकर कुछ हो गया तो मुझमें कोई शक्ति होनी चाहिये लेकिन मैं तो अपने रोग को भी दूर नहीं कर सकता। तो आप लोगों के दुख कैसे दूर कर सकता हूँ। लेकिन तुम लोग फिर भी यह कहते हो कि बाबा जी ! आपने यह कर दिया और वह कर दिया। इसलिये मैं इस नतीजे पर आया हूँ कि यह सब मनुष्य का अपना विश्वास है। सब आदमी एक जगह अपना विश्वास रख नहीं सकते इसलिये जहां भी तुम्हारा विश्वास है वहाँ पक्के होकर रहो। संसार में रहते हुये यदि शान्ति चाहते हो तो :—

मत देख पराये औगुन। क्यों पाप बढ़ावे छिन छिन।
पर जीव सतावे खिन खिन। छोड़ अपने औगुन गिन गिन ॥

जब हम किसी की निन्दा करते हैं तो चाहे उसका दोष है या नहीं हम उसके विरुद्ध गलत ख्याल लेकर उसकी बुराई करते हैं और उसका दिल दुखाते हैं। दिल दुखाना ही महा पाप है। आजकल समाचार पत्रों में क्या हो रहा है ? पौलिटीकल पार्टियाँ बनी हुई हैं। एक पार्टी का एक आदमी चाहे कितना ही अच्छा कार्यकर्त्ता क्यों न हो, उसका काम चाहे देश के लिये

कितना ही लाभदायक क्यों न हो लेकिन विरोधी पार्टी वाले उसको भी बदनाम करने की कोशिश करते रहते हैं। घरों में भी यही दुर्दशा है। बहुतसे आदमी मेरे हुक्का पीने पर एतराज करते हैं और भी मुझ पर कई तरह की नुक्ताचीनी करते हैं। मैं यह बातें क्यों कह रहा हूँ ? इसलिये कि अपना अनुभव कह जाऊँ। दातादयाल ने शिक्षा को बदल देने की आज्ञा दी थी। मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तुमने जो कुछ शिक्षा बदली, इसका कुछ लाभ भी है या अपने मान प्रतिष्ठा को कह रहे हो। मेरी आत्मा मानती है कि जो कुछ मेरा अनुभव है यह ठीक है। कोई महात्मा यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता किन्तु गुरु लोग ऐसी बातों का अपने चेलों द्वारा प्रोपेगंडा कराते हैं।

संत कृपालसिंह जी 'मानव एकता दिवस' मना रहे हैं। मुझे भी पत्र आया है। मेरा स्वास्थ्य इजाजत नहीं देता कि मैं जा सकूँ। यदि मैं वहाँ गया तो यह कहूँगा कि संसार की एकता को छोड़ो। पहिले अपने घरों में एकता स्थापित करो। जो आदमी अपने घर में एकता नहीं रख सकता वह देश में कैसे एकता ला सकता है। घरों में तो एक दूसरे के शत्रु हैं तो बाहर कैसे एकता स्थापित करोगे। तुम लोग आये हो। तुमको क्रियात्मक जीवन का पाठ बताता हूँ। जहां तक हो सके अपने अन्तर और अपने घरों में त्याग करने की आदत डालो। घर में यदि कोई तुमको कठोर वचन भी कहे तो उसको सहन करो। यह अमली जीवन की शिक्षा है। मैंने करके देखा हुआ है और अपने घर में हर तरह शान्ति रखने की कोशिश की है।

गांव में मेरी स्त्री के बक्स में से किसी ने कुछ कपड़े निकाल लिये। मेरी स्त्री को मेरे मतीजे शिवेन्द्र पर शुभा था। कुछ समय बाद लड़के की शादी थी। मेरी स्त्री ने कहा कि मैं शिवेन्द्र को घर में नहीं आने दूँगी। मैंने अपने घर में शान्ति रखने के लिये शिवेन्द्र से कहा कि तुम्हारी ताई तुम से अप्रसन्न है। तुम विवाह में न आना और वह न आया। दो साल बाद रायसाहब का कुछ सामान चोरी होगया। चोर का पता लग गया। फिर मेरी स्त्री को निश्चय होगया कि मेरे कपड़े इसी ने निकाले होंगे। शिवेन्द्र

ने नहीं निकाले । फिर उसने मुझसे कहा कि अब शिनेन्द्र और उसके बच्चों को बुलाओ । मैं उनको वह कपड़े दूँगी जो पदम के विवाह पर उनको देने थे । फिर उनको बुलाया और जो कुछ देना था दिया ।

मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ । मैं तुमको रामायण, गीता या ग्रन्थ साहब नहीं पढ़ाता । तुमको जीने का भेद या रहस्य बता रहा हूँ । सबसे पहिले अपने गृहस्थ के जीवन को ठीक रक्खो । तब तुमको शान्ति मिलेगी । यदि घर में स्त्री पुरुष का, भाई भाई का, बाप बेटे का या सास बहू का झगड़ा है तो शान्ति कैसी ? मैं गृहस्थी हूं और अपने अनुभवों को बर्णन करता हूँ ।

मामचन्द मेरा बड़ा प्रेमी है । मेरे घर का हिसाब किताब रखता है । इसके एक लड़के को चोरी करने की आदत पड़ गई । मैंने उससे कहा कि बच्चे अपने बाप की चोरी मत किया कर । मैं तुमको दस रुपये महिने भेज दिया करूँगा । वह मान गया । मैं उसको एक माह दस रुपये न भेज सका तो लड़के ने मुझे चिट्ठी लिखी कि बाबाजी ! इस महिने रुपये नहीं आये । चिट्ठी घर में आई । मेरी स्त्री को पता लगा कि दस रुपये महिने मामचन्द के लड़के को भेजे जारहे हैं । उसने मुझसे कहा कि आप भोले भाले हो । यह सत्संगी लोग आपको लूट रहे हैं । मैंने कहा कि तुम क्या चाहती हो ? उसने कहा कि मामचन्द हमारे घर में न आये । मैंने कहा बहुत अच्छा ! मैंने मामचन्द से कहा कि बच्चा ! ऐसे ऐसे बात है । तुम हमारे घर न आना । यह समझदार आदमी है । इसने बुरा नहीं माना । ढाई वर्ष तक घर नहीं आया । मैं जब बाहर जाता था तो मामचन्द मेरे साथ होता था । मेरी स्त्री के चोला छोड़ने के बाद यह मेरे घर में आया । यदि मैं भी हठ करता तो घर में रोज-लड़ाई होती ।

मेरे ताऊ का लड़का प० रामनरायन मुझसे बड़ा था । उसके संस्कार से मेरा जीवन बदला था । इसलिये मैं उसका बड़ा आदर करता था । मेरी सगी साली की शादी रामनरायन के छोटे भाई से हुई थी । रामनरायन जब भी मेरे पास आता तो मेरी स्त्री के सामने मुझसे मेरी साली की निन्दा

करता । उसका यह स्वभाव होगया था । अपनी बहिन की निन्दा सुनते २ मेरी स्त्री नाराज होगई और कहने लगी कि मैं इसको खाना बनाकर नहीं खिलाऊँगी । मैंने बड़े भाई को बुलाया । उसके पाँव पर सिर रक्खा और उससे कहा कि मेरे घर में मत आना । मुझसे जो सेवा हो सकेगी वह बाहर ही कर दिया करूँगा । वह जब तक जिन्दा रहा मैंने उसकी सेवा की । ऐसा क्यों हुआ ? यह निन्दा करने का परिणाम है ।

तुम लोग आते हो । अपने घरों में शान्ति रक्खो । अपने आपको संतुलित (adjust) करने की कोशिश करो । यदि परिस्थिति अधिक बिगड़ जाय और उसका सुधार होना सम्भव न हो तो अलग हो जाओ । घर में ठंडी लड़ाई मत रक्खो । मेरे पास अधिकतर वह लोग आते हैं जो घर से अशान्त होते हैं । अपने घरों में हर कीमत पर शान्ति रखने की कोशिश करो । स्त्रियाँ आती हैं, वह पुरुषों से दुखी हैं । पुरुष आते हैं, वह स्त्रियों से दुखी हैं । जिनके घर में सुख और शांति है वह साधु और सन्तों के पास नहीं जाते ।

घर में शान्ति रखने का सबसे बड़ा गुर यह है कि घर वालों की निन्दा मत करो । यदि घर में किसी में कोई दोष देखो तो घर से बाहर किसी दूसरे से मत कहो । उसको स्वयं समझाओ । कोई न कोई दोष या कमी हर एक में होती है । पहले अपने आप की निरख परख करो । गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, चाहे सन्त हो या परम सन्त । दोष सब में होता है । अपनी गलती को स्वीकार करो । अकेले बैठ कर अपनी गलती पर पश्चाताप करो । लड़ाई झगड़ा मत करो ।

मक्खी सम मत कर भिन भिन । नहीं खावे चोट तू छिन छिन ।।

दातादयाल जी महाराज अपने गुरु हुजूर महाराज राय सालिगराम साहब के दरबार में गये तो उन्होंने सत्संगियों में कोई ऐब देखे और गुरु महाराज से शिकायत की । उन्होंने कहा कि शिवब्रत लाल ! पहिले अपने आप को देखो । क्या तुम में कोई दोष नहीं है ? शहद की मक्खी बनो जो फूल का रस चूस लेती है और फूल को हानि नहीं पहुँचाती । दूसरी

मक्खी गंदगी फैलाती है और रोग पैदा करती है। निन्दा और चुगली मक्खी की तरह झगड़ा फैलाते हैं।

देखा कर सब के तू गुन। सुख मिले बहुत तोहि पुनि पुनि ।।

दातादयाल जी महाराज में मैंने यह गुण देखा हैं कि मेरे सामने कभी किसी की बुराई नहीं की। उनका एक मैनेजर था। वह सत्संगियों से पैसे ठग लिया करता था। एक बार पं० वलीराम से भी उसने पन्द्रह रुपये ले लिये। पं० वलीराम ने दातादयाल से उसकी शिकायत की लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन फिर कहा लेकिन वह फिर भी चुप रहे। तीसरे दिन फिर कहा तो उत्तर मिला कि जो करेगा वह भरेगा। मेरे कान बुराई सुनने को तैयार नहीं हैं।

एक बार झेलम के एक हिंदू सेठ ने एक वैश्या रक्खी हुई थी। हिंदुओं ने उसे बिरादरी से बॉयकाट किया हुआ था। वह सेठ झेलम से कभी कभी दातादयाल जी के दरबार में आया करता था। वह वैश्या भी साथ होती थी। दातादयाल उठकर खड़े हो जाते और उस वैश्या को कहते—माताजी ! राधास्वामी। झेलम के और भी बहुत बड़े बड़े आदमी उनके पास आया करते थे। एक बार दाता दयाल झेलम गये। रेलवे स्टेशन पर बहुतसे लोग उनके स्वागत के लिये पहुंचे। वह वैश्या और वह सेठ भी वहाँ गये। वैश्या ने प्रार्थना की कि महाराज ! आप हमारे यहाँ पधारिये। दातादयाल जी ने स्वीकार कर लिया। दूसरे लोग जो आये हुये थे वह कहने लगे कि महाराज इसको तो बिरादरी ने खारिज किया हुआ है। यदि आप इनके यहाँ जाओगे तो आपका सत्संग सुनने कौन आयेगा ? दातादयाल कहने लगे कि इस बात की परवाह नहीं है। कोई आये न आये। सन्त पापियों के लिये प्रगट होते हैं।

मेरे मस्तिष्क पर दातादयाल जी के संस्कार पड़े हुये हैं मगर मैं चौकन्ना (cautious) होगया हूँ। मैंने तरीका बदल दिया है। अब आप देखो कि सन्त किस तरह दूसरों की सहायता करते हैं। मेरी स्त्री ने उनको लिखा कि महाराज ! मेरे पति को तो आपने फकीर बना दिया है। वह मेरी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

परवाह नहीं करते । इसलिये मुझे घर वाले बहुत तंग करते हैं । उन्होंने लिखा कि जो तुमको एक कहे उसको १६ सुनाओ चाहे वह फकीरचन्द तुम्हारा पति ही क्यों न हो । दो वर्ष धीरज धरो । फिर तुमको धन, मान और तुम्हारा पति सब कुछ मिलेगा । जब उसको यह आज्ञा मिल गई, फिर घर में से यदि कोई उसको कोई बात कहता तो वह उसको एक की दो सुनाती । अन्त में घर वालों ने उसको कोई बात कहना बन्द कर दिया ।

जब मैं घर वापिस गया तो घरवालों ने मुझसे शिकायत की कि तुम्हारी स्त्री हमारे सामने बोलती है । मैंने उनसे क्षमा मांगी और और अपनी ड्यूटी पर चला गया । स्त्री ने मुझे लिखा कि घर वाले मुझे ताना देते हैं कि तुम्हारा पति तो हमसे क्षमा मांगता था और तुम हमारे सामने बोलती हो । मैंने वह चिठ्ठी दातादयाल के सामने रख दी । उन्होंने चिठ्ठी पढ़ी और कहा कि तुम्हारी स्त्री ने मेरी आज्ञा नहीं मानी । इसलिये मैं उसकी कोई मदद नहीं कर सकता । मैंने कहा महाराज ! कौनसी आज्ञा आपकी उसने नहीं मानी । उन्होंने कहा कि मैंने उसको आज्ञा दी थी कि जो तुमको एक कहे तुम उसको सोलह सुनाओ चाहे तुम्हारा पति ही क्यों न हो । मैंने कहा कि महाराज ! मेरी बिरादरी वाले तो मुझे पहिले ही कहा करते थे कि तुम ब्राह्मण हो और तुम्हारा गुरु कायस्थ है । अब जब लोग यह सुनेंगे कि आप स्त्रियों को ऐसी शिक्षा देते हैं तो वह क्या कहेंगे । कहने लगे कि फकीर ! मुझे इस बात की परवाह नहीं कि लोग क्या कहेंगे । मैं तुम्हारे घर में शान्ति देखना चाहता हूँ । तुम धार्मिक जगत के लोग हो । इसलिये तुमको पता नहीं है । यह है संतों का काम ।

एक सज्जन ने कहा कि यहाँ स्त्रियां नहीं रहनी चाहियें । ट्रस्ट का यह नियम है कि यहां अकेली स्त्री नहीं रहेगी । हम इस नियम के पाबन्द हैं । इस नियम की कोई बात विरुद्ध भी नहीं हो रही है । यह एक बुढ़िया स्त्री आई है । बीमार है, बहुत दुखी है । कोई सहारा नहीं है । उसके साथ उस का लड़का है । वह भी पागल है । वह कहती है कि मैं आपकी शरणागत हूँ । [illegible] रूपलाल यहां पडा है । पाँच वर्ष से बीमार है । टाँगें काम नहीं

करतीं। चारपाई से हिल नहीं सकता। कमाई का कोई साधन नहीं है। पास में पैसा नहीं है। कोई सम्पत्ति नहीं है। उसकी स्त्री उसकी सेवा करती है। मन्दिर उसका इलाज करवा रहा है। उनके खाने पीने का खर्च भी मन्दिर सहन कर रहा है। अब उसको दहली इलाज को भेजा हुआ है। वहाँ उसको बनी हुई टाँगें मिलेंगी। अब बताओ! क्या इन लोगों को मैं यहां से निकाल दूँ? मैं अपनी डियूटी को कहां ले जाऊँ। मैं संतों के नियम को देखूँ या दुनियां के कानून को देखूँ। दुनियां का मान अपमान कोई अर्थ नहीं रखता। दुनियां तो किसी को छोड़ती नहीं। दातादयाल जी महाराज के दरबार में एक तारादेवी नामी स्त्री रहा करती थी। वह अधेड़ आयु की स्त्री थी। दातादयाल बूढ़े थे लेकिन दुनियाँ नुक्ताचीनी किया करती थी। वह मेरे पास सुनाम में आये। मैंने कहा कि महाराज! लोग ऐसा कहते हैं। कहने लगे, फकीर! अपने दृष्टिकोण से वह ठीक कहते हैं। यह तारादेवी Medium (मध्यस्थ) है क्योंकि मेरे पास प्रायः स्त्रियाँ आती रहती हैं।

मैंने अपने अनुभव के अनुसार जो समझ में आया वह बता दिया। क्या कहना चाहता हूँ? यह कि ऐ मनुष्य! जहां तुम्हारा विश्वास है वहां ही अपने विश्वास को पक्का रक्खो। तुम्हारे विश्वास से ही तुमको सब कुछ मिलेगा। बाहर से न कोई राम आकर तुम्हारी सहायता करता है न कोई और किन्तु तुम्हारी सहायता तुम्हारा विश्वास करता है या तुम्हारे कर्म करते हैं। यदि तुम उस सच्चे खुदा या ईश्वर से मिलना चाहते हो तो वह है प्रकाश और शब्द। इसी से ही रचना होती है। अपने आप को ब्रह्ममय बनाओ। यदि संसार में सुखी रहना चाहते हो तो किसी की निन्दा या चुगली मत करो। दूसरे के दोष देखने के बजाय उसके गुण देखो। अपने घरेलु दायरे (घेरे) को अच्छा बनाओ। यदि तुम्हारे घर में एकता या एक मति है तो दूसरे तुम पर हावी होकर तंग नहीं कर सकते।

मैं कहूँ तोहि अब गुन गुन। तू मान वचन मेरा पुनि पुनि॥

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैंने यह बात बड़े अनुभव के बाद कही है।

गति गाई मैं यह हंसन। यों वर्ण सुनाई सन्तन।
अब कान धरो इन बचनन। नहीं रोओगे सिर धुन धुन॥

कोई सम्प्रदाय या धर्म ऐसा नहीं है जिसमें बुराई की निन्दा न हो। जिन घरों में अशान्ति है वह सिर पीट कर रोते हैं। यह घरेलू झगड़े क्यों हैं? क्योंकि उनको सत्संग नहीं मिला। यदि वे लोग संतों के पास गये भी तो किसी ने कहा राम राम जपा करो। किसी ने कहा कृष्ण नाम का पाठ किया करो। किसी ने कहा 'दया वाह गुरु' का सुमिरन किया करो। किसी ने अल्लाह अल्लाह का वरद बता दिया लेकिन जीवन व्यतीत करने का भेद किसी ने नहीं बताया।

यह बात कही मैं चुन चुन। कर राधास्वामी चरन स्पर्शन॥

आज संत कृपालसिंह जी महाराज के पत्र का ख्याल आया कि वह बाबा सावनसिंह जी महाराज के जन्मदिन को 'मानव एकता दिवस' मना रहे हैं। क्या एकता हो सकती है? जिस घर में ही एकता नहीं है, गद्दी वालों की आपस में लड़ाई है, एक दूसरे के साथ मिल कर बैठ नहीं सकते, बैठना तो दूर रहा कई गद्दीपति आपस में एक दूसरे से बात तक नहीं करते। धार्मिक लोगों का आपस में झगड़ा है। तो अपने निजी अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि ऐसी दशा में मानव एकता होना बहुत कठिन है। मैंने 'मनुष्य बनो' की आवाज उठाई है। क्या इससे सब इन्सान बन गये? गुरु ने तुमको मार्ग या विधि बताना है लेकिन बनोगे अपनी रहनी से। एकता कैसे होगी? दातादयाल जी ने कहा था कि अपनी रोजी आप कमाकर खाओ। इससे मुझे यह लाभ हुआ कि मैं किसी का आश्रित नहीं बना। मैंने गरीबी काटी है। छः महिने तक चने खाकर जीवन बिताया। कुलियों का काम किया। भट्टे से ईंटें निकाली और अपना पेट पाला मगर किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। इससे मेरे चित्त को शान्ति मिली। अब जवान लड़के यह आशा रखते हैं कि बाप या भाई उनको खर्च दें या और कोई उनकी सहायता करे।

स्वयं नहीं कमाते । जब घर वाले देते नहीं तो झगड़ा होता है । इसलिये जब स्वयं कमाने योग्य हो जाओ तो अपनी रोजी आप कमाओ । कोई भी काम हो उसे करो । शुरू शुरू में छोटे काम से ही आरम्भ कर दो और धीरे धीरे उन्नति करते जाओ ।

एक युवा मुसलमान लड़का एम० ए० था । कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलती थी । उसने कोट पतलून उतार दिये और कुर्ता चादर पहनकर हैमर मैन लाहौर रेलवे वर्कशाप में भरती होगया । खूब हथौड़ा चलाया । जिस लुहार के पास वह काम करता था वह अनपढ़ा था । एक दिन एक अंग्रेज आफिसर आगया । उसने अंग्रेजी में उस लुहार से कुछ पूछा लेकिन लुहार उत्तर न दे सका । उस लड़के ने उसको अंग्रेजी में उसके सवाल का उत्तर दिया । वह सुनकर चकित होगया । उसने पूछा कि तुम कहाँ तक पढ़े हो ! लड़के ने उत्तर दिया कि एम० ए० पास हूँ । अफसर ने कहा कि कल अपने सर्टीफिकेट लेकर मेरे पास आना । दूसरे दिन उसने सर्टीफिकेट देखे और उसको वौयलर उम्मेदवार बना दिया और वह सैकड़ों रुपये वेतन पाने लगा और उसका जीवन बन गया ।

तुम नव युवक हो । मँहगाई और बेरोजगारी का समय है । इसलिये छोटे से छोटा काम करने में भी मत घबराओ । यदि पेट में रोटी नहीं है तो जीवन दुखी है । यदि रोटी का कोई साधन नहीं है तो राम राम जपने से भी काम नहीं चलेगा । यदि पेट में रोटी है तो राम राम जपने में भी मन लगेगा वर्ना नहीं । जुबानी जमा खर्च चाहे कोई कुछ करता रहे लेकिन मैं नहीं मानता । मांगना अच्छा नहीं । इसलिये सबसे पहिले कोई काम करो और परिश्रम करो ताकि तुम्हारे जीवन निर्वाह का सामान हो सके । मेरे छोटे भाई को जब दातादयाल जी ने नाम दिया तो कहा कि नाम नहीं जपना । जीवन का अर्थ काम और काम का अर्थ जीवन है । १८ घण्टे नित्य काम करो । उसने आज्ञा का पालन किया । ढ़ाई हजार रुपया माह-वार वेतन तक पहुँचा । रायसाहब का खिताब मिला । अब परमार्थिक दृष्टि से वह अवधूत अवस्था में रहता है ।

मैं तुमको जीविका उपार्जन के लिये साहस से काम करने की हिदायत दे रहा हूँ। यह मनुष्य बनो के लिये पहली शर्त है। तुम नाम का अर्थ नहीं समझते। तुम समझते हो कि राधास्वामी राधास्वामी जपना या राम राम जपना या वाह गुरु कहना ही नाम है। लेकिन नाम वह है जिससे तुम में बेफिक्री आये और शान्ति मिले। जिस वस्तु से तुम्हारे मन में कमजोरी आती है उसको दूर करने की कोशिश करो। मैं अपने अनुभव की बात बताता हूँ। साढ़े पन्द्रह वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन में आगया। बचपन में ही ब्रह्मचर्य खो बैठने के कारण अशान्ति का आना तो अनिवार्य था। जिसका छोटी आयु में ब्रह्मचर्य गिर गया वह लड़का हो या लड़की हो, उसमें अशान्ति का आना लाजिमी है। उसको जीवन भर या तो साधु या सन्त लूटेंगे या वैद्य या डाक्टर लूटेंगे या ज्योतिषी लूटेंगे। इसका मुझे अनुभव है। सन् १९१६ ई० तक मैंने शब्द और प्रकाश के लिये बड़ा प्रयास किया। न शब्द सुना और न प्रकाश प्रगट हुआ। फिर बसरा बगदाद चला गया। वहाँ शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य स्थित होगया। फिर तो वहाँ बीन सुनता रहा। प्रकाश भी आगया और शब्द भी सुनता रहा। वहां मेरे साथ पुरुषोत्तमदास दुर्गादास, मंगलसैन आदि थे। हम सब एक दूसरे का अदब करते थे और शर्म रखते थे। हम सबको डर था कि यदि कोई गलती होगई तो दाता दयाल को क्या मुँह दिखायेंगे। दातादयाल जी महाराज ने "नैय्यरे आजम" पुस्तक में लिखा है :—

बा अदब हो बाअदब हो बा अदब।

जो आदमी अदब नहीं करता वह सफल नहीं होता। यदि बेटा बाप का आदर करता है तो बाप भी बेटे का आदर करता है। अब तो वह समय बदल गया। अब तो बाप और बेटा इकट्ठे बैठ कर शराब पीते हैं। बाल-बच्चेदार को सोचना चाहिये कि वह कोई कुकर्म न करे। अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह जितने भी अधिक भक्त हैं इन में अधिकतर या तो कामी रह चुके हैं या किसी ने गंदे उपन्यास पढ़कर अपना मानसिक ब्रह्मचर्य खोया है। इसलिये अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करो।

उस मालिक का ध्यान करो जिसने यह सृष्टि बनाई है। वह मालिक है पारब्रह्म है शब्दब्रह्म है। मुसलमानों में वह नूर है। ईसाई कहते हैं कि God was with word and word was with God. अर्थात् शब्द ईश्वर के साथ है और ईश्वर शब्द के साथ है।

मैंने बहुत कुछ कह दिया। यदि आप यह समझते हैं कि मेरी शिक्षा शांति और सुख के देने वाली है तो इसके प्रचार के लिये आप जो चाहें मानवता मन्दिर की सहायता कर सकते हैं।

ट्रस्ट वालो ! मैंने आप लोगों को बड़ा कष्ट दिया है। यह मुन्शीराम बेचारा बुढ़ापे में घरबार छोड़कर यहां काम करता है। मास्टर मोहनलाल, लालसिंह व अन्य सज्जनो ! आपने एक सच्चे आदमी की सहायता की है। आत्मा कहती है कि यदि सत्यम् विजयति है तो मालिक आपका भला करेगा।

अब जीवन उदास होगया है। बुढ़ापे के कारण कोई न कोई रोग रहता है। अब तो यह चाहता हूं कि मालिक अपने चरणों में ले ले।

बिनती

सुनो नाथ बिनती मेरी, जीव सहत कलेश।
भव का बन्धन काट इनके, दया करो विशेष ।।
तरन तारन नाम धारा, तार दीजे आज।
है तुम्हारे हाथ अब तो, स्वामी सब की लाज ।।
रोग भोग वियोग में, नहिं भक्ति साधन जोग।
दीन बन्धु बख्श दीजे, शरन का संजोग ।।
नाम दीजे काम कीजे, लीजे चरन लगाय।
सब भिखारी हैं तुम्हारे, इनकी कीजै सहाय ।।
पतित पावन भय मिटावन, यह कहूँ कर जोर।
राधास्वामी की दया से, छूटे मोर और तोर ।।

दशहरा सत्संग पर
दयालस्वरूप आनन्द राव जी (सिकन्दराबाद) का सन्देश

वीरे मुर्शा साहब, महात्माओ, आदरणीय बन्धुओ बहिनो !

मुझ पर दया हुई। यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ। मौज ने मुझे लाभान्वित होने नहीं दिया वर्ना आज मैं आपका दर्शन करता। मनुष्य विवश है। मौज जो चाहती है वह होता है।

मैं दुखी होकर भक्ति मार्ग में आया। १५ वर्ष की आयु में मेरा विवाह हुआ। २१ वर्ष की आयु हुई कि मेरे दो बच्चे हुये। उस समय मैं पाँचवीं क्लास में पढ़ता था। अशान्त था। हर समय यह चिन्ता थी कि मैं कैसे अपने बाल बच्चों के साथ गुजर कर सकूंगा।

मनुष्य पूर्ण है क्योंकि वह पूर्ण का अंश है स्वाभाविक ही पूर्ण की ओर आकर्षित होता रहता है। उस मालिक परमात्मा में जितनी शक्ति है, जितने धन हैं ऐश्वर्य हैं वह सब मनुष्य में भरे पड़े हैं।

पड़ा है बस्ती में पस्त हिम्मत होकर क्यों गाफिल।
रसाई तो तेरी ऐ खाक के पुतले खुदा तक है॥

हमारे शास्त्र कहते हैं—

ओउम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्चते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते॥

जिस तरह समुद्र की सारी शक्ति उसकी बूंद में भरी हुई है, जिस तरह सूर्य की सारी शक्ति किरण में मौजूद है, उसी तरह ब्रह्माण्ड की सारी शक्ति मनुष्य में भरी पड़ी है। हुजूर महर्षिजी महाराज जो मेरे आदर्श हैं

घट में कर दर्शन गुरु के, घट की महिमा जानले ।
पिंड में ब्रह्मण्ड है, सत्संग कर पहिचान ले ।।

मैं दुखी होकर दातादयाल जी की शरण में गया था, जहां से मुझे सन्त मत की शिक्षा का संस्कार मिला लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आती थी । परम दयालजी महाराज का अहसान है, दया है, आशीर्वाद है । यह कोई मेरे जन्म जन्म का शुभ कर्म था, हुजूर महाराज की चरण शरण मिली । हुजूर नन्दू भाईजी महाराज ने मुझे समझाया । बार बार समझाते थे लेकिन बात स्पष्टरूप से समझ में नहीं आई ।

जो ज्ञान परमदयालजी महाराज ने दिया है मेरी समझ में बात साफ आगई कि मैं छोटी आयु में अशान्त और दुखी क्यों था । उसका कारण मेरे बचपन की शादी मेरे वीर्य का पतन था । अशान्त था । मन महा चंचल था । लेकिन यह बात उस समय समझ में आई जब मेरी आयु ५० वर्ष से ऊपर होरही थी ।

सज्जनो ! जब तक ब्रह्मचर्य का पालन नहीं होगा, मनुष्य संसार में सुखी नहीं रह सकता । मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि लोग विवाह न करें, गृहस्थ जीवन में न रहें । नहीं, कदापि नहीं ।

एक नारी सदा ब्रह्मचारी ।

ब्रह्म के अवतार श्री रामचन्द्रजी थे । यही व्रत धारण किया था जिससे वह ब्रह्म के अवतार हो सके और संसार में आज तक अपना महान उच्च जीवन चरित्र छोड़ गये ।

एक नारी, एक बचन, एक ही बात ।

भगवान राम का यह महान व्रत या उपासना थी, मुझे याद है कि महर्षिजी महाराज ने भी मुझे कहा था कि—

'आनन्दराव ! अपनी सौभाग्यवती को अब अपनी बहिन समझो ।'

बात इशारे में कही जाती है । परमार्थ की खोज, शान्ति सुखी जीवन तब मिलेगा जब हम अपने वीर्य की रक्षा करेंगे ।

नारी की झाई पड़त, अन्धा होत भुजंग।
कहैं कबीर उन कौन गति, नित नारी के संग॥

ब्रह्मचर्य का पालन, परमार्थ प्राप्ती का महान साधन है। परमार्थ का भेद या रहस्य समझने के लिये मनोबल चाहिये वर्ना यह भेद प्रायः समझ में नहीं आता। हमारी परमार्थ की सारी खोज निरर्थक होती है।

महर्षिजी महाराज कहते थे—

योगी ज्ञानी ऋषि मुनी भाई।
इन सब चक्कर खाई॥

जो लोग भक्ति मार्ग में भगवान की पूजा अपने अपने भाव के अनुसार करते हैं, यदि उन्हें असलियत की समझ न आये तो सारा किया कराया निरर्थक जाता है। यह है ज्ञान जो मुझे परमदयाल फकीरचन्दजी से मिला।

दाता दयालजी ने जब नाम दान दिया था तो आदेश दिया था कि साधन करते रहो, सत्संग करो और कराओ। बचन पढ़ते रहो। मन बचन कर्म से शुद्ध रहने का प्रयत्न करते रहो। जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत होगा।

मैं सत्संग करते करते सत्संग कराने पर आगया। अब मैं सत्संग कराया करता हूँ सत्संगी मेरे श्रद्धालु होगये उन्होंने मुझे श्रद्धा भाव से मानना शुरू किया। नियमों पर चलने से जीवन बहुत समय तक तंगी, निर्धनता में बीता लेकिन जब से बहुत से सत्संगी मेरी ओर आकर्षित होने लगे तो मैं समझता था कि मुझमें ऋद्धि सिद्ध शक्ति आगई और मैं कुछ होगया।

सिकन्दरा बाद में बुरगू महादेव जी करोड़पती हैं। सनातन धर्म के अनुयायी हैं। सुखी परिवार है। वह भी मेरे पास सत्संग में आते हैं और उनके तीनों सुपुत्र प्रतिदिन मेरे सत्संग में बिला नागा आया करते थे। अब यह सत्संग बड़ा प्रबल होगया। हर जगह चर्चा होने लगी। एक दिन बुरगू ईश्वरया जी ने मुझसे कहा कि मेरे स्वप्न में दाता दयाल आये और आप भी साथ थे। आशीर्वाद दिया। मुकदमा जो तुम पर है उसमें सफलता हो जायगी। उसके कुछ दिन बाद बुरगू ईश्वरिया जी और उनके

साथी मेरे घर आये और मेरा इन्तजार करने लगे। मैं दफ्तर से देर में आया। उन्होंने मेरे गले में हार पहिनाये, मिठाई दी और कहा हमारा मुकदमा अदालत से हमारे मुआफिक होगया। मैं भी अहंकार में आगया क्योंकि सचाई क्या है उसे जानता नहीं था।

एक और घटना सुनाता हूँ। एक सत्संगी एक दिन सुबह जब मैं सत्संग से घर आया उसने फूल के हार मेरे गले में पहिनाये और मिठाई दी। मैंने उसका हार उसको दिया। मिठाई भी उसको दी और कहा कि भाई कौनसी खुशी की बात है। वह कहने लगे—'महाराज! आपने मुझे मरने से बचाया। कलरात मैं भोजन करके सोगया। ३ बजे सुबह का समय था। मैंने स्वप्न देखा कि मैं मर रहा हूँ। मेरी स्त्री बाल-बच्चे रो रहे हैं! आप आये और कहा कि तू नहीं मरेगा। अभी तुझसे बहुत काम लेना है। आपने मुझे मरने से बचा लिया। बात मेरी समझ में नहीं आती थी। मुझे इसका कोई पता नहीं था और मैं सोचता था कि मुझमें कोई ऋद्धि सिद्धि आगई है। अहंकारी भी होने लगा। लोग मेरी ओर आकर्षित होने लगे। मेरा बड़ा मान होने लगा। सचाई क्या हैं मुझे उसका पता तक नहीं।

धन्यवाद है परमदयालजी महाराज का, मेरा कोई जन्म जन्म का शुभ कर्म है। दाता दयालजी की उत्तम शिक्षा का संस्कार मिला। नन्दू भाई जी महाराज ने मार्ग दर्शन किया। परम दयालजी महाराज की चरण शरण ली। २० वर्ष का सत्संग मिला। महाराज जी ने हरएक सत्संग में यही कहा कि मनुष्य के मन पर संस्कार पड़ते रहते हैं। उसकी श्रद्धा विश्वास और उसके भाव से कभी स्वप्न में कभी जाग्रत में दिखाई देते हैं। यदि यह शुद्ध हैं पवित्र हैं तो उसकी कामनायें पूर्ण होती हैं। महाराज जी ने कहा कि मेरा रूप मेरे श्रद्धालु प्रेमी जनों के अन्तर प्रगट होता है और उनकी सहायता करता है लेकिन मुझे उसका इल्म नहीं होता। मैं भी जब कभी महर्षिजी के स्वप्न में दर्शन कर पाता तो बड़ा प्रसन्त होता था। मेरे काम भी बनते थे लेकिन अब समझ आई कि यह रूप रंग दृश्य सारे अपने ही मन के हैं। हम सत्संगी इन ही रूपों दृश्यों को देख कर

की ओर आकर्षित होते हैं। अपने धन को लुटाते हैं। इस सतज्ञान की समझ होने के बाद में सँभल गया। मुझे निश्चय होगया कि यह सारा खेल अपने ही मन का है। अब मैं अभ्यास में प्रकाश की ओर खिचता जाता हूँ। प्रकाश को पकड़ने की कोशिश करता रहता हूँ। साधन अभ्यास के बाद मेरे अन्तर खुशी शान्ति रहती है। इच्छायें नहीं सताती। मौज में जीवन बीतता है। अब मैं सत्संग में स्पष्ट बात कहता हूँ। बहुत कम लोग आकर्षित होते हैं। यह बात हर सन्त, महात्मा में कमी है लेकिन अपने जीवन का उदाहरण स्पष्ट कह कर किसी सन्त ने व्याख्या नहीं की। परिणाम यह हुआ कि मानव जाति भिन्न भिन्न सम्प्रदायों में बट गई। घृणा, द्वेष कीना कपट ने मानव सम्प्रदाय को घेर लिया। आज संसार में भाई भाई का शत्रु है। हम पक्षपाती होगये। इस बात के समझ में आजाने के बाद यह विश्वास हो जाता है कि मनुष्य को जो कुछ मिलता है वह उसको अपनी श्रद्धा, विश्वास, भाव और शुभ कर्म का फल है। कोई महात्मा, सन्त किसी को कुछ नहीं देता।

यदि मानव जाति की यह बात समझ में आजाय तो हम सब का मन एक प्लेट फार्म पर आजायगा। चाहे हमारा सम्बन्ध किसी भी धर्म से क्यों न हो बेशक हम अपने अपने धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार परमार्थ की कमाई करें हर मजहब ने, हिन्दुओं ने, मुसलमानों ने, ईसाइयों ने शब्द और प्रकाश की ओर ही संकेत किया है। हमारा अपना द्वेष इस बात के समझने से मिट जायगा। संसार में भाई चारा स्थापित होगा। सुख शान्ति का जीवन मिलेगा। मनुष्य मनुष्य की सेवा करेगा। मनुष्य की सेवा ही खुदा की ईश्वर की सच्ची पूजा और सेवा है।

जो लोग रंग रूप में फँसे रहते हैं उनको जीवन में न सुख मिलता है न शान्ति। मरने के बाद आवागवन से नहीं बचेंगे। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है जो मुझे जिस रूप में सच्ची श्रद्धा विश्वास ओर भाव से बुलायेगा मैं उसको उसी रूप में दर्शन दूँगा। श्री रामकृष्ण परमहंस एक अफ्रीकी के अन्तर प्रगट होगये वह उसी रूप की ओर आकर्षित हुए।